प्रारम्भिक-वक्तव्य

ईसा का यह जीवनवृत्तान्त प्राचीन फ्रीमैसनरी सुसायटी जेरोसलीम के "इसीर" (प्रतिष्ठित-सभासद) द्वारा लिखित पत्र के आधार पर रचा गया है। पत्र का अधिकतर आशयानुवाद पुस्तक में दिया गया है। ईसा का सब से पुरातन चित्र जो कैटाकोम्बस में एक क़बर की शिला पर मिला है और मृत्यु के आज्ञापत्र (वारंट) की लिपि भी पुस्तक का ऐतिहासिक मूल्य बढ़ाने के उद्देश्य से, पुस्तक में दिये गये हैं॥

उपर्युक्त पत्रादि अंग्रेजी के पुस्तक "The Crucification by an Eye Witness" द्वारा प्रकाशित हुये थे उन्हीं से लेकर इस पुस्तक में प्रकाशित किये गये हैं।

उपर्युक्त अंग्रेजी पुस्तक "इन्डोऐमरीकन बुककम्पनी" एमरीका ने प्रकाशित किया था। हम इस कम्पनी के अनुगृहीत हैं जिनकी कृपा से ये ऐतिहासिक और अप्रकट घटनायें प्रकट हुये और जिनकी कृपा ही से हम इस योग्य हुये कि आर्य्यभाषाभिज्ञ जनता के सम्मुख उन्हें रख सके॥

उपर्युक्त अंग्रेजी पुस्तक हमें बरेली के आर्य्यरत्न श्रीमान् डाक्टर श्यामसरूप जी सत्यव्रत एल० एम० एस० के द्वारा प्राप्त हुआ था अतः हम उन की भी इस कृपा के लिये विशेष कृतज्ञ हैं॥

हम इन पुस्तकों के रचयिता महानुभावों के भी ऋणी हैं जिन की पुस्तकों से इस पुस्तक के पूर्ण करने में सहायता ली गई है। जहां २ भी सहायता ली गई है असल पुस्तक का वहां उल्लेख कर दिया गया है॥

यह विश्वास है कि इस पुस्तक के द्वारा अप्रकट ऐतिहासिक घटनायें प्रकट होकर ईसा के नाम से प्रचलित ईसाई धर्म पर अच्छा प्रकाश पड़े गा॥

नारायण प्रसाद।

भूमिका

ईसाई मत की आधारभूत मुख्यतया ४ इंजीलें हैं जिन के नाम और निर्माण काल इस प्रकार हैं:—

(१) मत्ती (Matthews) की इंजील सन् ४० और ५० ईसवी के मध्यमें लिखीगई

(२) मर्क़स (Mark) की सन् ६३ या ६४ ई० में

(३) लूक़ा (Luke) की सन् ६० और ६४ ई० के मध्यमें

(४) यूहन्ना (John) की सन् ९६ या ९७ ई० में—

ईसा और इंजील दोनों के सम्बन्ध में, ईसाई मत के जन्म काल ही से, इस प्रकार के विचार ईसाई जगत में उठते रहे हैं जिस से दोनों की सत्ता असंदिग्ध नहीं कही जासकी—

ईसा के सम्बन्ध में अनेक विचार,

पहला विचार जो ईसाकी सत्ताके सम्बन्धमें है वह यह है कि ईसा वास्तव में कोई हुआ ही नहीं, इस सम्बन्धमें जो बातें कहीं और प्रमाण रूप में उपस्थित की जाती हैं, ये हैं:—

(१) अ—समकालीन लेखकों के लिखे लेखों अथवा इतिहासों में ईसा के जीवन का संकेत भी नहीं पाया जाता—

"हिस्टोरियन्स हिस्ट्री आफ दी वर्ल्ड*" में लिखा है कि यह निश्चित नियम है कि महान् पुरुषों की महत्ता उनके जीवन कालही में उनके नामों से प्रगट होने लगती है– परन्तु ईसा के नाम अथवा जीवन घटनाओं का उस समय के इतिहासों में सर्वथा अभाव है। न केवल इतना ही है कि तत्कालीन लेखों में ईसा के नाम का और जीवन-घटनाओं का अभाव है किन्तु पीछे हुई कतिपय नसलों तक के लेखों में उस की सत्ता का कोई चिह्न नहीं पाया जाता †।

(२) दूसरा विचार यह है—कुछ बातें कृष्ण और बुद्ध से लेकर इंजील के लेखकोंने ईसा की कल्पना करली है वास्तव में ईसा कोई नहीं था। इस बात की स्थापना के लिये "कृष्ण के क्राइष्ट" नामक पुस्तक देखने के योग्य है। पुस्तक के रचयिताने, बड़े परिश्रम के साथ, पुराण और इंजीलों की तुलना करते हुये इंजील का उनके आधार पर रचा जाना प्रमाणित करने का उद्योग किया है।

(२) ईसा की जन्मतिथि भी निश्चित नहीं है। ईसवी सन् जो प्रचलित है। ईसाके जन्म काल से बताया जाता है – परन्तु बात यह है कि ईसाका जन्म काल अनिश्चित और विरोधपूर्ण है। इसलिये नहीं कहा जासका कि

---

* Historians History of the World Vol II Col III.

† जोज़िफ़स के इतिहास में जो वाक्य ईसा से सम्बन्धित आज कल पाया जाता है वह असली लेखक का नहीं किन्तु बहुत पीछे का बढ़ाया हुआ है। देखो उपर्युक्त इतिहास जिल्द २ अध्याय १२ का पृष्ठ १६८ ॥

यह सन् ईसा के जन्म काल से है।

(क) चेम्बर की इन्साइक्लो पेडिया (Chamber's Encyclopedia) में सन् ईसवी से कुछेक वर्ष और कम से कम चार वर्ष पहले ईसा का जन्म काल बतलाया गया है।

(ख) ऐपलेटन की नवीन साइक्लो पेडिया में (Appleton's New Cyclopedia) में ६ वर्ष पहिले का जन्म बतलाया गया है।

(ग) "एरट महोदयने" जन्म तिथि ७ वर्ष पहिले दफम्बर मासमें निश्चित की है। (The Treasury of Bible Knowledge new edition Lon on p. 191)

(४) इसी प्रकार जन्म वर्षकी तरह जन्मतिथि-और मास भी विवादपूर्ण और अनिश्चित है।

दूसरा विचार ईसा के सम्बन्ध में यह है कि ईसा हुआ तो। परन्तु वह १२ वर्ष की आयु तक जेरोसलीम आदि में रहा उस के बाद शिक्षा पानेके लिये भारत वर्ष चला आया और ३० वर्ष की आयुतक यहां शिक्षा पाता रहा। उस के बाद लोटकर जेरोसलीम गया। और वहां जाकर उसने ईसाई धर्म्म की स्थापना की। इस विचार के समर्थक रूस के यात्री "निकोलस" "नोटोविच" हैं।

नोटोविच महोदयने एक पुस्तक प्रकाशित की थी जिसका नाम है। (**ईसाका अज्ञात जीवन चरित्र**) (Unknown Life of Christ by Nicolas Notovitch) पुस्तक में उन्हो ने "हिमिज़" (Himis) के पुस्तकालय से ईसा का एक जीवन चरित्र प्राप्त कर के छापा है।

यह जीवन चरित्र, नोटोविच का कथन है कि पाली भाषा में था और हिन्दुस्तान में लिखा गया था। उस की पाली भाषा की लिपि ल्हासा (तिब्बत) के पुस्तकालय में है

उसी कापी से यह अनुवाद तिब्बती भाषा में किया गया था। जो उन्हें हिमिज़ के पुस्तकालय में मिला। जीवन चरित्र पद्यमय है। जब नटोविच ने पुस्तक का प्रथम संस्करण प्रकाशित किया था। तो उस पर स्वभाविक रीति से पादरियों और कुछेक अन्य पुरुषों ने भी जिन में मेक्समूलर सहित भी सम्मिलित थे, आक्षेप किये और पुस्तक का प्रभाव दूर करने का यत्न किया गया। यह भी कहा गया कि नोटोविच न तिब्बत गये; न वहाँ कोई पुस्तकालय "हिमिज़" नामक स्थान में है; न "हिमिज़" नाम का वहाँ कोई नगर है इत्यादि............परन्तु पुस्तक के अंगरेजी भाषा के संस्करण में (पहला संस्करण फ्रेंच भाषा में था) नोटोविच ने समस्त आक्षेपों का सफलता के साथ परिहार किया है। उन्होंने अंगरेज कर्मचारियों के नाम भी दिये हैं जिन से वे इस यात्रा में मिले थे उन में अंगरेजी सेना के एक मुख्य कर्मचारी "यंगहस्बेंड" भी सम्मिलित हैं जिन के नेतृत्व में अंगरेज़ों की ओर से तिब्बत पर चढ़ाई हुई थी— "हिमिज़" स्थान का भी उन्हों ने सविवर्ण पता दिया है और उस का मार्ग भी बतलाया है।

जीवन चरित्र, जो उपर्युक्त भांति नोटोविच महोदय को प्राप्त हुआ है। उस की मुख्य २ बातें यह हैं। जीवन चरित्र में प्रथम बतलाया गया है। कि ये चरित्र विवर्ण लेखक को इसराईली व्यापारियों के द्वारा प्राप्त हुये थे:—

तत्पश्चात् चरित्र विवर्ण इस प्रकार वर्णित है:—

"ईसा जब १३ वर्ष का हुआ तो उस के विवाह की

छेड़ छाड़ शुरू हुई, इस से अप्रसन्न होकर व्यापारियों के साथ वह सिंध चला आया—कि यहां आकर बुद्धमत की शिक्षा प्राप्त करें—

सिंध से काशी आया और यहां ६ वर्ष तक रहकर उसने धार्मिक शिक्षा पाई—उसे वैश्यों और शूद्रों से अनुराग था उन्हीं में वह प्रायः रहा करता था। यहां से शाक्य मुनि बुद्ध की जन्म भूमि में गया, पालीभाषा सीखी और ६ वर्ष में बौद्ध मत की शिक्षाओं से पूर्णतया अभिज्ञ हुआ।

तत्पश्चात् पश्चिम की ओर पारसियों के देश में पहुंचा और धर्मप्रचार करता हुआ जेरूसलीम, ३० वर्ष की आयुमें, पहुंच गया"।

उस का जन्म किस प्रकार हुआ, और मृत्यु किसप्रकार उसने मार्ग में क्या २ उपदेश किये थे, इत्यादि बातें भी प्राप्त जीवन चरित्र में अंकित हैं। परन्तु विस्तारभय से यहां छोड़ दी गई।

ईसा का १३ से ३० वर्ष तक का जीवन किस प्रकार व्यतीत हुआ, उसने इस आयुमें क्या २ सीखा अथवा क्या २ काम किये? इन प्रश्नों का उत्तर देने में समस्त इँजीलें असमर्थ हैं। ईसाके जो जीवनचरित्र, इस नवीन "प्राप्त जीवन चरित्र को छोड़कर, अब तक प्रकाशित हुये हैं, उनमें भी उपयुक्त आयु की मध्य की किसी एक घटनाका भी उल्लेख नहीं किया गया है।

तीसरा विचार यह है–कि ईसा जेरोसलीम की फ्रीमैसनरी सुसाइटी का सदस्य था। वहीं उसने शिक्षा प्राप्त की और जानद्वारा (John, the Baptist) जो उसके साथही उपयुक्त सुसाइटी का सदस्य बना था, सुसाइटी के नियमानुसार, विपतस्मा लिया। और सुसाइटी की अनुमति ही से उसने प्रचारकार्य्यप्रारम्भ किया–उसके प्रचारसे यहूदी पुजारी अप्रसन्न हुये फल स्वरूप उसे सूली मिली परन्तु सूली से वह मरा नहीं था। राज कर्मचारियों ने उसे भ्रम से मरा समझ लिया था। क्यों कि क्लेशात्यन्त से बेसुध और मूर्छित होगया था।

सुसायटी के सदस्य जोज़ेफ ने उसका शव जो वास्तव में जीवित शरीर था प्राप्त किया तिकोडेमस एक चिकत्सक ने उसकी चिकित्सा की वह अच्छा होगया और कुछ दिनों तक वह फिर सुसायटी की देख भाल में कार्य्य करता रहा अंत में उसकी मृत्यु हुई और समुद्र के एक स्थान में दफ़न किया गया–इस विचार का समर्थन उस पत्र से होता है जो इँजीलों के लिखेजाने से वर्षों पहले का है और इसपुस्तक में प्रकाशित किया गया है और जिसके सम्बन्ध में आगेके प्रष्ठों में आवश्यक विचार भी किया जायगा। इस विचार का परिणाम यह है कि ईसा के समस्त चमत्कार, और विशेष कर मृत्यु संबन्धी, सब से बड़ा चमत्कार, जिन के कथनोपकथनों से इंजीलें भरी पड़ी है, निर्मूल और बनावटी, केवल उस समय के अंध विश्वासी लोगों के फुसलाने के लिये उसके शिष्यों द्वारा गढ़े सिद्ध होते हैं। और इस परिणाम का फल यह होता है कि इँजीलों का इँजीलत्व

रुख़सत होजाता है। इन इंजीलों का मुख्य और बड़ा भाग ईसा के उपर्युक्त भांति कल्पित चमत्कार ही हैं।

इंजील सम्बन्धी विचार,

जैसा ऊपर कहा जाचुका है :—

मसीह के शिष्यों में से चारने चार इँजीलों को लिखा चारों में थोड़े २ भेद के साथ एक ही घटना में दुहराई गई हैं। इन इँजीलों का तीन चौथाई भाग ईसा के चमत्कारों से भरा है लगभग एक चौथाई भाग ऐसा है जिस में ईसा के उपदेशों का उल्लेख किया गया है।

इँजीलों के लेखक साधारण पुरुष थे उन में से एक दो तो मछुए ही थे, ईसा के शिष्यों में से यहूदाह एक शिष्य नें जब ईसा को पकड़ वाया तो सब शिष्य भाग गये ईसा के साथ एक पीटर और एक और शिष्य के सिवा कोई नहीं गया और पीटर ने भी पूछे जाने पर साफ़ कह दिया कि ईसा को जानता भी नहीं (देखो—मत्ती की इँजील अध्याय २६ आयत ६९-७५) यह घटना केवल मत्ती की इँजील ही में नहीं किंतु चारों इँजीलों में अंकित हुई है * ॥

---

* पीटर के हक़ में यह कहा जाता है कि उसका झूंठ बोलना ईसा की भविष्यद्वाणी के आधार पर था क्यों कि उसने पकड़े जाने से पूर्व ही कह दिया था कि पीटर इस प्रकार झूंठ बोलेगा परन्तु यह भविष्यद्वाणी झूंठ बोलने के बाद इंजीलों में लिखी गई है संभव है कि उस का झूठ छिपाने ही को इंजील के रचयिताओं ने यह उद्योग किया हो ॥

(२) नये और पुराने अहदनामों से सम्बन्धित पुस्तकों की संख्या एक से अधिक बार कम होचुकी है। जिस के संबन्ध में एक दो बातें नीचे लिखी जाती हैं (२)।

(क) नाइस की सभा (Nicene Council) ने सन् ३२५ ई० में "एरियस" (Arius) के सिद्धान्तों को अनुचित ठहराते हुये ईसाई मत के मन्तव्य स्थिर किये—"एरियस" ईसा का अनुयायी अर्थात् ईसाई ही था परन्तु ईसा को ईश्वर तुल्य नहीं मानता था उस का विचार था कि ईसा अन्य पुरुषों के सदृश ईश्वर का उत्पन्न किया हुआ एक विशिष्ट प्राणी था। एरियस के अनेक अनुयायी थे और एरियन (Arian) कहलाते थे।

जो हस्तलिखित पुस्तक एरियनके अधिकार में थे और जिन्हें वे इन्हीं चार इंजीलों की भांति प्रतिष्ठित मानते थे वे सब "ज़ब्त" कर लिये गये, नष्ट किये गये और सदाके लिये धर्म पुस्तकों से उनका बहिष्कार होगया इसी सभाने उस समय प्रचलित कतिपय मन्तव्यों को भी ईसाई मत से पृथक करदिया।

(ख) फिर छठी शताब्दीमें "एपोक्राइफा" (Apocrypha) के नाम से जो ईसाई धर्म पुस्तक मानेजाते थे और जिन की संख्या बहुत थी "लैटन कौंसिल आंव ट्रेंट" (Latin Council of Trent) को विवश होकर उन सब को धर्म पुस्तकों की सूची से पृथक करदेना पड़ा—ऐसा करने के लिये क्यों उपर्युक्त कौंसिल को विवश होना पड़ा, इसका कारण केवल यह था कि इन सब पुस्तकों का एक्यमत नहीं था परस्पर

विरुद्ध थे उन पर वाद विवाद बढ़कर जनता में अविश्वास बढ़ रहा था—इस बढ़ते हुये असंतोष और अविश्वास को दूर करने ही के उद्देश्य से धर्म पुस्तकों की संख्या में कांट छांट करने के लिये कौंसिल को इस प्रकार बाधित होना पड़ा था।

(३) इन इंजीलों से ईसा की वास्तविक प्रतिष्ठा नहीं बढ़ती बल्कि अपमान होता है:—

(क) इन्हों ने ईसा को मिथ्याभाषी सिद्ध किया है। उदाहरण के लिये यूहन्ना की इंजील अध्याय ७ की २ से १० तक की आयतें पढ़ो—इन आयतों में वर्णित है कि ईसा के भाईयोंने उस से कहा कि यहूदिया (नगर) में जा जिससे तेरे शिष्य भी उन कामों को देखें जो तू करता है........... ईसाने उत्तर दिया कि "दुनिया" मुझसे अदावत रखती है क्योंकि मैं उस पर गवाही देता हूं कि उस के काम बुरे हैं, तुम ईद में (यहूदिया) जाओ; मैं अभी ईद में नहीं जाता.............परन्तु जब उस के भाई रवाने होगये तो वह भी छिपकर ईद में चला गया"—क्या इस प्रकार की घटनाओं से ईसा सत्यवादी ठहर सकता है?

(ख) इन इंजीलों में बात-बात पर इस प्रकार के वाक्य प्रयुक्त हुये हैं जिन में ईसा की ओर से यह इच्छा करना प्रकट की गई है कि लोग उस पर ईमान लावें— उदाहरण के लिये देखो:—

(१) यूहन्ना की इंजील अध्याय ६ आयत २८ से ३० तक—

ईसा से लोगोंने पूछा कि "हम क्या करें जिस से ईश्वर के काम पूरे करें" ईसा ने उत्तर दिया कि "ईश्वर का काम यह है कि तुम उस पर जिसे उसने भेजा (अर्थात् ईसा पर) ईमान लाओ"।

(२) फिर इसी अध्याय की ३५ और ३६ वीं आयत देखो "ईसाने उन्हें कहा कि मैं जिन्दगी की रोटी हूं जो मेरे पास आता है कदापि भूखा न होगा और जो मुझ पर ईमान लाता है वह कभी प्यासा न होगा"।

(३) फिर इसी अध्याय की ४० वीं आयत देखो "जिस ने मुझे (ईसा को) भेजा है उस की मर्जी यह है कि प्रत्येक जो बेटे (ईसा) को देखे और उस पर ईमान लावें"—इत्यादि

इसी प्रकार अनेक स्थलों पर लिखा हुआ मिलता है—इंजीलें प्रकट करती हैं कि ईसा की इस इच्छा का पारावार नहीं था कि लोग उस पर ईमान लावें।

पर निष्काम पुरुष की स्थिति में ईसा का काम यह होना चाहिये था कि वह लोगोंको सच्चाइयोंका उपदेश करता, लोग सुनकर उसे विचारते जिसे वे सच्चाइयां अच्छी मालूम होतीं ग्रहण करता जिसे अच्छी न लगती न ग्रहण करता परन्तु इसके सर्वथा विरुद्ध इंजीलों ने ईसाको "ईमान लाने" का व्यसन में लोलुप सिद्ध करके उस का स्थान बहुत नीचा कर दिया है।

(ग) इन इंजीलों की एक विशेषता यह भी है कि इन्हों ने यत्न किया है कि किसी ईसाई को भी सच्चा ईमान दार

सिद्ध न होने देवें—उदाहरण के लिये देखो "मरकुस" की इंजील अध्याय १६ आयत १७ और १८—ईसा ने कहा कि "वे जो ईमान लावेंगे उन के साथ यह चिन्ह होंगे:—

वे मेरे नाम से देवों को निकालेंगे और नई भाषा में बोलेंगे, सांपों को उठालेंगे और यदि कोई घातक वस्तु (विषादि) पीलेंगे तो उन्हें उस से कुछ हानि न होगी, वे बीमारों पर हाथ रख देंगे तो चंगे होजावेंगे"

अब इन चिन्हों से समस्त ईसाइयों की जांच करके देखो तो प्रगट होगा कि इन चिन्हों के अनुसार एक ईसाई भी ईमानदार नहीं है। इन बातों का उल्लेख करके पाठकों को इंजीलों का दिग्दर्शन मात्र कराया गया है। समस्त बातें तो उन के पढ़ने से ही विदित होंगी। अब उस पत्र के संबंध में कुछ कहना चाहते है जो इस पुस्तक में प्रकाशित किया गया है और जिस का ओर ऊपर संकेत किया जाचुका है।

फ्रीमेसनरी सोसायटी के एक इमीर द्वारा लिखित पत्र सम्बन्धी आवश्यक विचार,

प्रचलित "फ्री मेसनरी सुसायटी" का पूर्व रूप एक संघटन (Order) था जो ईसा के जन्म से बहुत पूर्व संघटित होचुका था और ईसा के जन्म समय पेलिस्टीन मेसेपोटेमिया और मिश्र आदि देशों में फैला हुआ सफलता पूर्वक चलरहा था—इस संघटन की शाखायें प्रायः नगर २

में स्थापित होचुकी थी ईसा के जन्म से बहुत पहले * मैकावे के समय में भी इस संघटन के स्थापित होचुकने के प्रमाण मिलते हैं—पत्र संबंधी बात उठाने से पूर्व इस संघटन का कुछ हाल लिखना उचित प्रतीत होता है क्योंकि संघटन संबंधी बातों के न जानने से पत्र की आवश्यक्ता और महत्व नहीं समझे जासकते।

ऐसनरी संघटन का संक्षिप्त वृतान्त,

आचार और योग्यता के विचार से इस संघटन के सदस्य चार श्रेणियों में विभक्त थे—

प्रथम और प्रारम्भिक श्रेणी में अविवाहित बालक लियेजाते थे और आजन्म ब्रह्मचारी रहने की प्रतिज्ञा के साथ वे संघटन में प्रविष्ट हुआ करते थे—

इन्हें "इसीन" (Esseen) "नवशिष्य" अथवा नव छात्र कहते थे—यदि कोई युवक जो बालकपन की सीमा उलंघन करचुका है, प्रविष्ट होना चाहता तो उसे तीन वर्ष तक आचार संबंधी कठिन परीक्षा देने के लिये पदाध्येयो (Apprentice) की भांति रहना पड़ता था—उच्च श्रेणी के सदस्य चिकित्सा शास्त्र के अध्ययन और उसका क्रियात्मक ज्ञान प्राप्त करने में संलग्न रहा करते थे इसी उद्देश्य

---

* मैकावीज़ (Macabees) यहूदी राज कुमारों को कहते हैं जिन के समय का इतिहास दो भागों में 'मैकावीज़' नाम से प्रसिद्ध है। मैकावे (Maccobia) शब्द इन्हीं राजकुमारों का द्योतक है॥

की पूर्त्यर्थ उन्हें प्राकृतिक नियमों का उच्च ज्ञान प्राप्त करना पड़ताथा—ये सदस्य औषधियों और खनिज पदार्थों के गुणों और यह कि उनका प्राणी के शरीर और स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसकी अच्छी जानकारी रखते थे — संघटन के सदस्य सब समष्टिवादी (Communist) होते थे प्रत्येक, उपार्जित धन संघटन के सम्मिलित कोष के अर्पण करदेना होता था— संघटन के सदस्य, सूर्योदय से पूर्व कभी सांसारिक विषयों की चर्चा नहीं करते थे—दिन निकलते ही सब ईश्वर प्रार्थना के लिये एकत्र होजाते थे—प्रार्थना पश्चात् प्रातःकाल का भोजन करके अपने २ निश्चित क्षेत्र में, अपना कार्य्य करने चले जाते थे—मध्यान्ह काल में फिर सब एकत्रित होते थे और हाथ पांव धो, स्वच्छ श्वेत वस्त्र धारण कर, सब मिलकर भोजन करते थे—जब तक उच्च श्रेणी मे नहीं पहुंचता था कोई संघटन का सदस्य संघटन के गुप्त भेदों से अभिज्ञ नहीं होसक्ता था— संघटन के उच्च श्रेणी के सदस्य के लिये कठिन प्रतिबंध था कि गुप्त भेद निम्न श्रेणी के सदस्यों को न बतलावें—सदस्यों को नियम भंग करने का अपराधी होने पर संघटन से प्रथक होना पड़ता था—उच्च श्रेणी में प्रवेश करने के लिये आचारिक जीवन, बुद्धिमत्ता, आस्तिकता, और विद्या में निपुणता होना अनिवार्य्य था—

गृहस्थ जीवन में ये सदस्य आतिथ्य वली, परोपकारी और संघटन के नियमों के दृढ़ पालक होते थे—

राज नैतिक विषयों और क्रान्तिपूर्ण कार्यों में कभी भाग नहीं लेते थे—निदान इस प्रकार का शांतिमय जीवन

रखते थे और प्रदर्शन करते थे—उस श्रेणी के सदस्य इसीर (Essee) कहलाते थे उन्हीं को वृद्ध अथवा ज्योष्ठ (Elder or Iorapent) भी कहते थे—

उस समय के इतिहासों से जानकारी रखनेवाले सज्जन अच्छी तरह जानते हैं कि "इसोरगण" कैसे दृढ़ चरित्र होते थे और कितनी कठोरता से लेखन अथवा भाषण में सत्येक नियमों का पालन करते थे। और संघटन के सदस्य वृत्ति उपलब्धार्थ कृषी और बाग का काम करते थे— और उनके अधिकतर सिद्धांत यूनान के प्रसिद्ध दार्शनिक "पईथा गोरस" की शिक्षाओं पर निर्भर थे—

बुद्धि (Wisdom) और सुकृत्य (Virtue) का विस्तार करना उनका मुख्य धर्म था। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये समय २ पर संघटन के अधिवेशन संवटित हुआ करते थे—

उनके प्रणाम के वाक्य जिससे परस्पर एक दूसरे को पहचान लिया करते थे ये थे "शांति तुम्हारे साथ हो" (Peace be with you) "जेहोवा" (Jehova) के नाम से ईश्वर की उपासना करते थे। यहूदियों की प्रथानुसार मन्दिरों में बलिदान करने कदापि नहीं जाते थे—भोजन में रोटी खाते और प्याला पीते थे

अपनी समस्त धार्मिक विधियों का पालन घर पर ही करते थे। संघटन के सदस्य अपने विश्वास रक्षार्थ मरजाने को सब से बड़ा सुकृत्य समझते थे— मृत्यु का भय; उनका पग धर्म पथ से नहीं डिगा सकता था—उनका विश्वास था

कि आत्मा शरीर में बंदी है मृत्यु प्राप्त होनेहीसे, इसबंधनसे छूट कर शांतिधाम को पुनः लौट सका है—

छल, अधार्मिकता, ईर्षा, द्वेष और हिंसा, पाप और दुष्कृत्य समझे जाते थे—इन से उन्हें बड़ी घृणा थी इत्यादि-बिना किसी टीका टिप्पणी के संघटन का, उपर्युक्त संक्षिप्त वृत्तांत ही कदाचित पर्य्याप्त है कि हम उस के आधार पर के सदस्योंके लिये विश्वास अथवा अविश्वास के योग्य होने की सम्मति थिर करसकें—

पत्र क्या था और किस प्रकार प्राप्तहुआ था ?

जब ईसा के चमत्कारों और विशेष रीति से उसके मृत्यु संबंधी चमत्कारों की प्रसिद्धि इधर उधर हुई और मिश्र में भी पहुंची तो "अलेकज़ेंडरिया" के संघटन के "ज्योज्येष्ठ" ने जेरोसलीम के संघटन के तत्कालीन नेता (इसीर) को पत्र लिखकर चमत्कारों की वास्तविकता पूछी उसीके उत्तर में जेरोसलीम के "इसीर" ने जो पत्र लिखा था वही इस पुस्तक में प्रकाशित किया गया है—

यह पत्र किसप्रकार प्राप्त हुआ इसके संबंध में कहा जाता है कि "एबसीनिया" व्यापार मंडल के एक सदस्यने "एलेकज़ेन्डरिया" के एक पुराने घर में एक पुराना "पटंकित (Parchment) पत्र" पाया—इस घर में इस से पूर्व जर्मन के कुछेक विरक्त (Friars) पुरुष रहते थे—इस में उनका पुस्तकालय भी था—जाते समय वे उस पटंकित पत्र को लेजाना भूलगये थे। फ्रांस देश के एक विद्यानुरागी सज्जन ने, जो दैवात वहां था, उस पत्रका सार जनता में प्रगट करदिया। तब वहां के पादरियों तक भी इसकी चर्चा

फैली--तो एक धर्मोन्मत्त ईसाई मिश्नरी ने उद्योग किया कि जिस प्रकार भी होसके इस पत्रको नष्ट करदे परंतु इस ईसा के भक्त का प्रयत्न सफल न होसका—यह पत्र आदि में लेटिन भाषा में लिखा गया था उसकी एक लेटिन लिपि फ्री-मैसनों के माध्यम से जर्मन देश में पहुंच गई जहां वह वहां की फ्रीमेसनरी सुसायटी के अधिकार में है और पूर्णतया सुरक्षित है। पुराण वस्तु शास्त्र संबंधी अन्वेषणाओं (Archeological discoveries) से जो घटनास्थल पर हुई थीः प्रमाणित हुआ कि वह गृह जिस में पर्यंकित पत्र मिला था "ईसीनों के संघटन" की संपत्ति थी और उस में संघटन के सदस्य रहते भी थे और उसी में उनका वृहत पुस्तकालय भी था—उपर्युक्त अन्वेषणाओं से यह भी सिद्ध हुआ कि प्राप्त पत्रही. इस विद्या और धर्म संबन्धी वृहत पुस्तकालय का. एक मात्र अवशिष्ट साहित्यांश है—

फ्रांसके उपर्युक्त विद्यानुरागी सज्जनका. जिसने सब से प्रथम इस पत्र की आवश्यकता और ऐतिहासिक मूल्य पर विचार किया था यत्न यह था कि उसे फ्रंच विद्वत्परिषद् में रखकर, परिषद्के पुस्तकालय का मूल्य बढ़ावे परन्तु यह मनोरथ सफल न हो सका—

इधर ईसा के भक्त उपर्युक्त मिशनरी को पत्र नष्ट करडालने में असफलता का मुख्य कारण यह हुआ कि एबिसीनिया के प्रभाव शाली व्यापार मंडल और पाईथागोरस्सीय परिषद्ने हस्तक्षेप करके पत्रको अपने अधिकार में कर लिया—उन से फ्रीमेसनों के अधिकार में गया और उन्हींके द्वारा जर्मन पहुंचा —जर्मन अनुवादक के मतानुसार इस में किंचित् भी

संदेह नहीं है कि यह प्राप्त पत्र एक मात्र प्रति, उस पत्रकी है जो इस समय पृथ्वी तल पर विद्यमान है—

यह पत्र ईसा की मृत्यु के सात वर्ष बाद ही लिखा गया था—

पत्र में ईसाका जीवन चरित्र, उस के सिद्धान्त और उस की मृत्युका सविवर्ण वर्णन है—

पत्र से यह भी सिद्ध है कि ईसा, इसीनों के संघटन का एक सदस्य था—इसीनों के लेखन और भाषण की सत्यता पर, जिसकी ऊपर चर्चा होचुकी है, दृष्टिपात करने से, पत्र में अंकित घटनाओं के सत्य और विश्वसनीय होने में लेश मात्र भी संदेह नहीं रहता है—

उपर्युक्त सामग्री के आधार पर हम ईसाके सम्बन्ध में उचित रीति से क्या मत स्थिर करसक्ते हैं, यह अंतिम प्रश्न है जिस पर कुछ प्रकाश डालने के साथ ही यह भूमिका समाप्त होगी—

"ईसा का कोई अस्तित्व नहीं था" यह पश्चमी विचार है

पश्चिमी विद्वान इस प्रकार के विचार गढ़ने और प्रगट करने में सिद्धहस्त हैं। वे इसी प्रकार के मत प्राचीन भारतीय इतिहास के सुनहरी-अंकों राम, कृष्ण, सीता आदि के सम्बन्ध में भी समय २ पर प्रकट करते रहे हैं—

उन के विचार जिस प्रकार राम, कृष्ण आदि के संबन्ध में अवलेहना की दृष्टि से देखे जाते हैं उसी प्रकार ईसा के सम्बन्ध में भी देखे जाने योग्य हैं।

दुनिया जानती है कि एलेकजेन्डरिया का वृहत् पुस्तकालय मुसलमान खलीफाओं के शासन काल में भस्मीभूत होचुका है। सम्भव है कि कोई तत्कालीन इतिहास, ईसा का चरित्र विधायक, उस में हो और जलगया हो। इन के सिवा अब ईसा की सत्ता की साक्षियां जो नवीन नहीं किन्तु पर्य्याप्त प्राचीन हैं, जैसे नोटोविच का प्रकाशित तिब्बती भाषा से अनुवादित जीवन चरित्र तथा हसीर लिखित पत्र, जिसका उल्लेख ऊपर होचुका है, जिन्हें तत्कालीन इतिहास भी कह सकते हैं। प्रत्येक प्राचीन सभ्यता रखनेवाले देशों से मिल रही हैं तो कोई समझदार आदमी यह नहीं कह सकता कि ईसा हुआ ही नहीं था

"क्रॉस के काइट" नामक पुस्तक के रचयिता के मुख्य विचार यह हैं कि इंजील के रचयिताओं ने अनेक बातें कृष्ण और बुद्ध आदि भारतीय महापुरुषों की जीवनियों से लेकर उनका समावेश, ईसा के जीवन चरित्र में कर दिया है। यह कथन, उन समस्त युक्तियों और प्रमाणों से, जो पुस्तक के रचयिता ने पुस्तक में संग्रह किये हैं, अनुचित उपेक्षा किये बिना, सरसरी तौर से रद्द नहीं किया जासकता। अवश्य इस विषय में कथनोपकथन के लिये बहुत स्थान है—इसलिये इस विषय में क्या सम्मति स्थिर करनी चाहिये यह बात हम प्रत्येक अनुसन्धान शील पाठकों पर ही छोड़ते हैं—

नोटोविच का प्रकाशित जीवन चरित्र अविश्वसनीय नहीं प्रतीत होता है। दूसरे संस्करण में जो उत्तर उसने अपने आक्षेपकों को दिये हैं वह रद्द करने के योग्य नहीं हैं—उस

पर विश्वास करने का एक हेतु और प्रबल हेतु यह भी है कि यदि यह कल्पना कर ली जावे कि ईसा १३ से ३० वर्ष की आयु में भी जेरोसलोम और उस के आस पास ही रहा तो क्यों नहीं इस बीच की कोई घटना इंजीलों अथवा उस के जीवन चरित्रों में पाई जाती। न उसका कोई शिष्य यह बतला सका है कि इस बीच में वह कहां रहा—इसलिये जब एक मात्र कथन इस अज्ञात आयु के सम्बन्ध में यह है कि उसने यह समय यहां (भारतवर्ष में) बिताया और उसके प्रमाण भी दिये जाते हैं तो कोई हेतु नहीं कि क्यों न उसका विश्वास किया जावे—अस्तु हम नोटोविच प्रकाशित जीवन चरित्र को प्रमाणित समझकर नोटोविच को उसकी इस खोज के लिये प्रशंसा के योग्य समझते हैं—

जेरोसलोमस्थ संघटन के इसीर के पत्र के प्रमाणित और विश्वसनीय होने के संबन्ध में भी दो मत नहीं होसके—इस लिये इन लेख बद्ध साक्षियों के आधार पर उचित रीति से जो निश्चय किया जासक्ता है वह यह है:—

कि सा बालकाल ही से शिक्षा पाने के लिये हिन्दुस्तान में आया उसने यहां वैदिक धर्म और बौद्धमत की शिक्षा ग्रहण की शिक्षित होकर युवावस्था में जेरोसलीम वापिस गया। वहां फ्रीमेसनरों के संघटन में सम्मिलित हुआ और बिप्तिस्मा लिया और उन्हीं के मन्तव्य और उन शिक्षाओं का, जो उसे यहां मिली थी, उस संघटन की देख भाल में प्रचार किया—उसे सूलीका दण्ड मिला अवश्य परन्तु उस से उस की मृत्यु नहीं हुई। निकोडेमस आदि ने चिकित्सा और देखभाल करके उसे बचालिया। इंजील में

उस के शिष्यों ने जो "फरिशतों" (देवदूतों) का आना उस की क़ब्र-पर लिखा है वे देवदूत न थे किन्तु संघटन के श्वेत वस्त्रधारी सदस्य ही थे जैसा कि पत्र में अंकित है और जो संघटन की ओर से उस की देखभाल के लिये नियुक्त थे। वह इस सूली के दिये मृत्यु दण्ड से उपयुक्त भांति बचकर कुछ काल तक और जीता रहा और संघटन ही की देखभाल में रहा, इसी बीच में वह अपने शिष्यों से भी मिला (इसी मिलने को इंजीलों में पुनर्जीवित होकर अपने शिष्यों से मिलना लिखा है)—उसके बाद वह अपनी मौत से मरा। उसके नाम से जो चमत्कार विशेष कर मृत्यु सम्बन्धी चमत्कार इंजीलों में हैं वे कल्पित, गढ़े हुये और घटनाओं को तोड़ मरोड़ कर केवल उस समय के लोगों में ईसा की महत्ता बढ़ाने के लिये लिखे गये प्रतीत होते हैं क्यों कि उस समय के मूढ़ विश्वासी जन उस पुरुष का विश्वास ही नहीं करते थे जो चमत्कार न दिखलाता हो और इसलिये ये चमत्कार विश्वास के अयोग्य हैं—

रामगढ़ शैल
भाद्रपद शुक्ल ८ सं: १९९८ वि०

नारायण प्रसाद
वानप्रस्थी,

* ओ३म् *

ईसा का जीवन वृत्तान्त

एक दृष्ट साक्षी द्वारा.

अंगरेजी में छपे एक पुस्तक (The Crucification by an Eyewitness) के आधार पर यह ईसा का जीवन वृत्तान्त लिखा गया है। यह वृत्तान्त एक पत्र के रूप में है। यह पत्र एक इसीर का लिखा हुआ है और उसने जेरोसलीम के "इसीरों के संघटन" की ओर से "एलेक्ज़ेन्डरिया" के ऐसे ही संघटन के एक इसीर के नाम, उस के पत्रोत्तर रूप में, लिखा था। यह पत्र ईसा की मृत्यु होने के सात वर्ष पीछे लिखा गया था। पत्र का आशयानुवाद इस प्रकार है:—

प्रिय भ्राताओ! "शान्ति तुम्हारे साथ हो"— जो घटनायें जेरोसलीम और पेलेस्टीन में घटित हुईं, उन्हें तुम ने जन प्रवाद (अफ़वाह) के रूप में सुना है। ईसा के सम्बन्ध में तुम्हारा यह विश्वास, कि वह हमारे संघटन का एक सदस्य और इस प्रकार हमारा एक भाई था, ठीक है। ईसा के कतिपय मित्र भी जिन में

कुछेक रोम के निवासी और कुछ यहूदी हैं हमारे संघटन से सम्बन्धित हैं। और यह भी ठीक है कि उस ने असाधारण कार्य्य किये और शिक्षा दी और अन्त में स्वधर्म रक्षणार्थ मृत्यु का कष्ट भोगा। ईसा "नज़ेरथ" में जो टेबौर पर्वत की सुन्दरघाटी के द्वार पर है और जिस में किसौन नदी, पर्वत के शिखर के ढाल से बहती है, उत्पन्न हुआ था। वह उत्पन्न समय से ही हमारे संघटन के एक सदस्य की रक्षा में था, जिस के द्वारा उस के माता, पिता ने भी मिश्र को भागते हुये आश्रय प्राप्त किया था। मिश्र की सीमाओं पर हमारे अनेक भाई रहते हैं। यह बात तुम से अप्रगट नहीं है। ईसा हमारे संघटन में जान (John, the Baptist) के साथ ही जब वह नवयुवक ही था, प्रविष्ट हुआ था—उस समय वह जैलीलो में रहता था। वहां से जेरोसलीम हाल ही में आया था और यहां भी वह संघटन की रक्षा में था। मसीदा के महान दुर्ग के समीप जूथा में, जहां के समीपवर्ती देश पर्वतों की उच्च शिखर मालाओं से आच्छादित हैं, वह दीक्षित हुआ था। अब इस बात से तुम सन्तुष्ट हो गये हो कि वह हमारे संघटन का एक सदस्य था और यह भी जान गये हो कि वह किस प्रकार की शिक्षा सर्व साधारण को देता था और यह कि वह संघटन की मर्य्यादाओं, विशेष कर बिपतिस्मा, रोटी तोड़ने, मद्यपान आदि के प्रयोगों में भाग लेता था। मृत समुद्र के समीपवर्ती स्थान जार्डन में उसे "जान" ने बिपतिस्मा दिया था। यह तुम जानते ही हो कि बिपतिस्मे की पवित्र प्रथा चिरकाल से संघटन में प्रचलित है। तुम्हें अवश्य

आश्चर्य्य होगा कि चमत्कार और अमानुषी कृत्यों में विश्वास क्यों हमारे मध्य में जड़ पकड़ रहा है। विशेष कर इस लिये कि हम सब अपने सदस्यों में से प्रत्येक के कृत्यों के उत्तर दायित्व के भार ग्राही हैं। इस लिये तुम्हें यह समझ लेना चाहिये कि जनप्रवाद वायुवत् होता है। वायु जब प्रवाहित होता है तो प्रथम शुद्ध रूप में बहता है परन्तु ज्यों २ आगे बढ़ता जाता है उस में वाष्प, नमी, धूलि सम्मिलित होती जाती हैं परिणाम यह होता है कि कुछ और आगे बढ़ कर वह अन्धकार उत्पन्न कर देता है। और अन्त में अपने शुद्ध परिमाणुओं के स्थान में वह प्रायः समस्त उन्हीं कणों का संघात हो जाता है जो उस में उत्तरोत्तर सम्मिलित होते गये थे। यही उदाहरण यथा तथ्यतः ईसा और उस के भाग्य के सम्बन्ध में चरितार्थ होता है।

यह भी स्मरण रखना चाहिये कि दैव प्रबोधित पुरुषों में से जिस किसीने उस के सम्बन्ध में कुछ कहा अथवा लिखा है वे भी प्रायः शुद्धोन्माद से प्रभावित थे और उस के अनुराग और अपनी सरलता के वशीभूत होकर उन से, कहने वालों ने ईसा के सम्बन्ध में जो कुछ भी कहा, उन्हों ने "चूंचरा" किये बिना उस पर विश्वास कर लिया। इन कहने वालों के लिये कहना चाहिये कि वे, विश्वास करने वालों से भी कहीं बढ़कर सरल प्रकृति वाले और मूढ़ विश्वासी थे।

यह बात भी सदैव ध्यान में रखनी चाहिये कि हमारे संघटन की मर्य्यादानुसार, हमारे गुप्त रहस्य, इन

कहने अथवा लिखने वालों पर कभी प्रकट नहीं होसके थे। इस लिये ईसा की जो सहायता गुप्त रीति से हम ने की अथवा जिस प्रकार उस की रक्षा संघटन की ओर से की गई, उस का ज्ञान केवल संघटन के प्रतिष्ठित सदस्यों को ही हो सका था।

अन्त में यह बात भी याद रखनी चाहिये कि हमारे अशिथिल नियम देश के शासकों की योजनाओं अथवा उनकी राजसभा के कार्य्यों में हस्ताक्षेप करने अथवा सोत्साह भाग लेने की आज्ञा नहीं देते।

इसी लिये हमने जो कुछ भी किया वह चुपचाप और गुप्तरीति से किया और राजकीय नियमों से, जो अपनी प्रथानुसार प्रयोग में आये थे, कष्ट सहन किया। परन्तु इस कष्ट को सहते हुये भी हमने अपने मित्रों की गुप्त रीति से इस प्रकार सहायता की जिस से उन्हें तो सहायता मिल जाय और हमारे नियम भी भंग न हों।

यह बात जान लो कि ईसा हमारा भाई था और है और वह स्वयं, जब उस ने जूथा में हमरे संघटन द्वारा दीक्षा ली थी, संकल्प बद्ध हुआ था कि हमारा संघटन उत्तर काल में उस के लिये मातृ पितृवत् होगा। और सचमुच अपने नियमानुसार हमने उस के साथ अपने को ऐसा ही सिद्ध भी किया।

अपने संघठन की मर्यादा और सच्चाई को लक्ष्य में रखते हुये, भाइयों! यह मैं तुम को इस लिये लिख रहा हूं कि-आगामि घटनाओं से सम्बन्धित सच्चाइयों को

तुम जान सको। मैं इस पत्र में केवल वे ही बातें लिख रहा हूं जिन्हें मैं जानता हूं अथवा जिन्हें मैंने स्वयं अपनी आंखों से देखा है और जिन में मुझे गहरा अनुराग था, और जिन में मैंने उत्साह पूर्ण भाग लिया है। ईसा को सूली लगने के दिन से अब तक जब कि मैं तुम्हें यह पत्र लिख रहा हूं यहूदी सात बार अपने प्रसिद्ध त्योहार पासोवर* (Passover) से सम्बन्धित भेड़ के बच्चों को खाचुके हैं। हमारा भाई जिस को हम सब प्रेम करते थे दैवी तेज सम्पन्न था। यद्यपि हम घटित घटनाओं को भूले नहीं हैं तो भी आगामी घटनाओं को देखने के लिये जीवित हैं।

निःसन्देह जैसे कि ये शब्द सत्य हैं जो मेरे मुंह से निकल रहे हैं अथवा वे विचार सत्य हैं जिन्हें मैं लिख रहा हूं, उसी प्रकार यह भी सत्य है और इस की सत्यता पर, मुझे गहरा विश्वास है कि ईसा ईश्वर प्रिय था और उसी नित्यात्मा के द्वारा उत्पन्न किया गया था। वह अपने को ईश्वर पुत्र कहता था और ईश्वर के नाम पर शिक्षा देकर उसने अपने आप को हम पर ऐसा ही सिद्ध भी किया था। वह पवित्र जीवन व्यतीत करता था और ईश्वरीय सृष्टि के गुप्त रहस्यों का अच्छा जानकार था। इन समस्त विषयों में हम (गुप्त संघठन के सदस्य)

---

* Passover "पासोवर" यहूदियों का एक त्योहार है जिस से वे मिश्रियों की पहली सन्तत के मारे जाने और अपनी पहली औलाद के बचे रहने के उपलक्ष में मनाते हैं और भेड़ों का बलिदान करके इस का मांस प्रसाद की भांति खाते हैं।

ईश्वर को मानते हैं और हम में से जो कहता है कि "मैं ही ईश्वर हूं" वह अवश्य वैसा ही है क्यों कि जो "ईश्वर" नहीं है वह ऐसा कह भी नहीं सकता। जो ऐसा शब्द अपने हृदय में नहीं रखता उसने वह शब्द आत्मा (ईश्वर) से सीखा भी नहीं है।

अब मैं तुम्हें उस पुरुष (ईसा) के माता, पिता का विवर्ण सुनाता हूं जो समस्त प्राणियों से प्रेम रखता था और जिस के लिये हम अत्यन्त आदर का भाव रखते हैं, जिस से तुम्हें उस का पूरा २ ज्ञान प्राप्त हो जावे।

यह बाल्यावस्था ही से हमारे संघटन के लिये उत्पन्न हुआ था। उस के सम्बन्ध में एक इसीर भाई ने भावि कथन किया था जिस को एक स्त्री* ने देवदूत समझा था। इस स्त्री को कुछ एक बातें बतलाई गई थीं जिन्हें जीवन की दैवी और अलौकिक घटनाओं का रूप दिया गया था। उसे ऐसी बातों के जानने से जिन की वह व्याख्या नहीं कर सकी मनोरंजन होता था।

हमारे इसीर भाई ने, इन बातों में उस का कितना हाथ था, इस की हमें सूचना दी थी और संघटन को गुप्त रीति से खोज रखने और बालक की रक्षा करने के लिये उद्यत किया था।

और जोज़ेफ़, जो एक अनुभवी और सत्यनिष्ठ पुरुष था, हमारे संघटन के एक सेवक द्वारा समझाया गया था कि उस स्त्री को न छोड़े और न उस के विश्वास

* तात्पर्य ईसा की माता मरियम से है।

में जो उसे अपनी पवित्रता में है, विघ्न कारक हो। और अपने को बालक का पिता समझे जब तक कि हमारा संघटन उसे नवशिष्य की भांति ग्रहण न करले।

—

इस प्रकार जोज़फ़ को जब वह मिश्र को भाग रहा था हमारे संघटन ने पथप्रदर्शता करते हुये, रक्षा की थी और उसे अपने उस संघटन में जो "फ़ेलियस" पर्वत की ढाल पर था जहां रोम निवासियों ने एक मन्दिर निर्माण कर के सूर्य के अर्पण किया था, अतिथि की भांति भेजदिया था। और इसीरों को जो वहां रहते थे नियुक्त कर दिया गया था कि जोज़ेफ़, उस की पत्नी और बालक का अपने समाज में परिचय करा देवें जिस से वे सर्व रचयिता ईश्वर की स्तुति और उपासना के मार्ग से अभिज्ञ हो सकें और संस्कृत रोटी खाने और पवित्र मद्यपान करने की विधि को सीख भी लेवें।

हमारी प्रार्थना पर, हमारे संघटन को जो जेरोसलीम में है, उन्हों ने सूचना दी कि किस प्रकार उपर्युक्त सब कार्य्य किये गये। जोज़ेफ़ "सीधे और अर्द्ध चक्षु" पुरुषों की कोटि में सम्मिलित किया गया था और मरियम उसकी पत्नी को स्त्रियों में बाईं ओर जगह दी गई थी जहां उन्हों ने हमारे संघटन के भाइयों के साथ रोटी खाई, मद्य पी और पवित्र गीतों का गान किया।

इसके सिवा जोज़ेफ़ने हमारे संघटन के संरक्षक के सम्मुख प्रतिज्ञा की थी कि वह सदा के लिये बालक के स्वत्वाधिकार को परित्याग करता है जो इसके बाद संघटन का

ही चालक समझा जावे गा। तत्पश्चात् उसे पवित्र संघटन के चिन्ह और अभिवादन विधि बतलाई गई थी, जिस से वह इस यात्रा में संघटन के सदस्यों को अपने से अभिज्ञ करा सकें उन को वापिस आने के लिये सुरक्षित मार्ग भी बतला दिया गया था। यह मार्ग देश के ऐसे भाग में होकर जाता था जहां कतिपय उदार और शिक्षित यहूदी निवास करते थे जो धर्म-पुस्तकों के पाठक भी थे और जिन्हों ने स्वाध्याय ही के लिये अपने को अर्पण कर रक्खा था।

इन में हमारे संघटन के भी कतिपय सदस्य थे। इन को आज्ञा दी गई थी कि जोजेफ़ की रक्षा और आतिथ्य, उस के वहां आने पर और वहां आने से पूर्व भी करें। देश का यह भाग, हेलियो पोलिस सदृश सुन्दर देश के अन्तर्गत था और उसी देश के अन्तर्गत तत्सम्बन्धी विशाल वन भी था और यह सब औनियास के निर्माण कराये, जहोवा के मन्दिर के समीप थे। जब जैलीलो से अशान्ति दूर होगई और रोम निवासी "वारुस" जूडिया में लूट मार करके उस प्रान्त को अशान्त बना रहे थे, जोज़ेफ़ नजैरथ को जो टेबौर पहाड़ की ढाल पर था चला गया। परन्तु थोड़ा ही समय बीता कि "आर्चेलौस" ने जैलोली में नवीन भय हेतु प्रस्तुत किये और इस लिये जोज़ेफ़ को हमारे भ्राताओं ने जेरोसलीम चले जाने के लिये सन्नद्ध किया और कहा कि "लुहेम" होता हुआ वहाँ जाकर हमारे संघटन की संरक्षता प्राप्त करे। यह काम पूर्ण हो चुका और वे पासोवर त्योहार पर निसीन पहुंचे। यहां स्वयं मैं ने उन से बात चीत की। मैं उस समय संघटन की निम्न कक्षा में था और संघटन के

एक वृद्ध की आज्ञानुसार जोज़ेफ़ को एक सन्देश पहुंचाने गया था मुझे वह एक पवित्रात्मा और अनुभवी प्रतीत हुआ, वह सदैव पूर्ण विचार और बुद्धिमत्ता से बात करता था। उस ने मरियम को उत्तेजना दी थी कि सत्यता पूर्ण अपने स्वप्नोपम विचारों को स्पष्टता से प्रकट किया करे और समझाया था कि वस्तुओं में ऐसी विभिन्नतायें हैं जिस प्रकार रात्रि और दिन में और उसे शिक्षा दी थी कि किस प्रकार ईश्वर प्रार्थना और भक्ति से अपना चित्त शान्त रक्खे, उसका चित्त दैवी विचारों से पूर्ण होचुका था। जिस से उसे रह रह कर स्वर्गीय वस्तुओं का ध्यान आया करता था और पार्थिव पदार्थ उसे अरुचिकर प्रतीत होने लगे थे। परिणाम रूप में इसने अपने बालक का मस्तिष्क स्वाध्याय और अविनाशी सत्य सिद्धान्तों के खोज के विचारों से भर दिया था। जोज़ेफ़ ने मरियम को परामर्श दिया था कि बालक को अपने अच्छे प्रभाव से प्रभावित करे, और उसने स्वयं भी उसे (ईसा को) विद्या और बुद्धि पूर्ण शिक्षायें दीं और उस के शुद्ध अन्तःकरण की, संकल्पात्मक विचार व्यसनों से रक्षा की और एक बार जब बालक ईसा ने ज़ेरोसलीम में पवित्र वस्तुओं के सम्बन्ध में तत्कालीन लेखकों से बात की तो उसके विचार से फ़रीसियों (यहूदियों के एक पन्थ के अनुयायी) के धार्मिक विचारों को बहुत आघात पहुंचा और उन्होंने बालक को भय हेतुक और अप्रमाण भूत समझा।

फ़रीसी लोग मूसा के मन्तव्य विवर्ण और साम्प्रदायिक परंपरा का कठोरता से पालन किया करते थे। अतः यदि कोई उन की बातों में विश्वास नहीं करता था अथवा जो कोई

व्यवहारिक बाहरी भेद, जो उनकी पूजा के समय के लिये नियत था, नहीं रखता था, तो वे उस के घोर विरोधी हो जाते थे। वे लोग अनेकों की दृष्टि में दान देते थे। मृत पुरुषों के राज्य, अच्छे देवदूतों और बुरी रूहों के प्रभाव, और यहूदियों के लिये भविष्यत में नित्य स्वर्ग मिलने की शिक्षा दिया करते थे। यद्यपि सर्वसाधारण में उनके अनेक मित्र थे जो, शक्तिमान भी थे, और प्रभावशाली भी, तो भी दैवी शक्ति न उन के गृहों में थी न उन की वाणियों में, परन्तु जोज़ेफ़ हमारी शिक्षा ग्रहण करने को आया था अतः उसने बिना किसी रूपक अथवा रहस्य के उन शिक्षाओं को वर्धमान बालक के मस्तिष्क में भर दिया। बालक को इस प्रकार प्रारम्भ ही में प्राणियों के परिसंताप का बोध होगया और इस लिये बालक के मुंह से दैवी शिक्षा सुनकर वे हर्षोन्मत्त होगये। लेखकगण उसे जैलीली का निवासी जानते थे इस लिये उन्होंने उसे भी तिरस्कृत समझा जैसा कि वे वहां के अन्य निवासियों को तिरस्कृत समझते थे। परन्तु कुछेक हमारे भाई मन्दिर में गये और वे अभिवादन के द्वारा अपना रहस्य प्रकट किये बिना, उनके मध्य; बालक की रक्षार्थ, रहे।

जब वह दैवी बालक मन्दिर में खुल्लमखुल्ला अपना मत प्रकट करने लगा तब हमारे भाइयों को भय की आशंका हुई क्योंकि वे जानते थे कि फ़ैरीसी और उनके गुरुओं ने गुप्त सभा करके निश्चय कर रक्खा था कि बालक को उस की शिक्षाओं के कारण जैलीली से निर्वासित कर देवें। इस लिये उन्होंने बालक को 'सोफ़ीम' के एक यहूदी मन्दिर में जानेके लिये प्रोत्साहित किया और विधि-निषेध नियमों की जान-

कारी प्राप्त करने में उस की रुचि पैदा करने का यत्न किया क्यों कि उन्होंने जान लिया था कि बालक का उत्साह और किसी और नहीं उत्पन्न किया जासका था। परिणाम यह हुआ कि उस बड़े नगर में, जहां "पासोवर" त्योहार के कारण देश भर से अनेक पुरुष स्त्री एकत्रित थे, वह बालक अपने माता पिता से प्रथक कर दिया गया। हमारे मित्र इसोरगण को भी इस घटना की सूचना मिली उन्होंने विचार किया कि बालक का अधिक काल तक फ़रीसियों में रहना न तो सुरक्षित ही है और न नीत्यानुकूल। विशेष कर ऐसी अवस्था में एक *"रव्वी" बालक का सच्चा मित्र और शिक्षक बना बैठा था उस समय की उपस्थिति में वहां न तो कोई जासकता था और न जाकर बालक के विचार और उत्साह को मर्य्यादित ही कर सकता था क्यों कि वह वहां कुछेक कलह-शील, दांभिक और दुश्चरित्रों के साथ था। वह रव्वी घटनावशात एक यात्रार्थ "जेरीचू" को गया इस लिये हमने जोज़ेफ़ और उसकी पत्नी को इसकी सूचना दी परन्तु उन्हें हमने दुहरे कष्ट में पाया क्यों कि उन्हें एक और सूचना मिली थी कि मरियम के मित्र "इलीज़ै बेथ" का पति मर गया है। आपद्ग्रस्त मरियम ३ दिन तक अपने बालक की खोज करती रही। और साथ ही उसकी यह भी प्रबल इच्छा थी कि अपने मित्र के पास भी आवे। निदान चौथे दिन उस का बालक उसे सोफ़ीम में मिला जैसा कि हमारे भाइयों ने उसे बतलाया था। और "नैबिन" जो बालक की देख रेख में बड़ी दिलचस्पी लेता था, हमारे संघटन का एक गुप्त सदस्य

*रव्वी यहूदियों के पीर (गुरु) के लिये प्रयुक्त होता है।

था। और जिसे बालक की रक्षा के लिये संघटन से परामर्श मिल चुके थे। इस प्रकार मरियम उसका पति और उस का बालक जूथा वापिस आये। यहाँ उसने इलीज़बेथ को अपने पुत्र जान के साथ घोर कष्ट में पाया; वहां ये दोनों बालक अधिकतर साथ रहते थे और साथ ही रहते हुये दैवी और अलौकिक बातें किया करते थे। बहुधा ये दोनों पहाड़ के घने जंगली भागों में घूमा करते थे। और इस प्रकार परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध वाले मित्र बनगये, उन की मित्रता, उन की विचार समता से जो सत्यान्वेषण के लिये थी, और भी दृढ़ होगई॥

जान जो ज़कारिया का पुत्र था "नज़रीन"* की शिक्षा शुद्धांतःकरण के सम्बन्ध में प्राप्त कर चुका था और पूर्णतया धार्मिक पुस्तकों और साम्प्रदायिक परंपरा से अभिज्ञ होगया था। परन्तु उसने दुनियां में उनकी सुचारुता और उत्कर्षता को नहीं समझा था और न प्राकृतिक नियमों से जानकारी रखता था और न ईसा को जानता था॥

वह मूर्ति पूजकों के साम्प्रदायिक आचार को कुत्सित समझता था और समस्त प्रजा पीड़कों से घृणा करता था। ईसा को हमारे संघटनके प्रथम श्रेणीमें प्रविष्ट होने का समय आगया था। इस लिये हमारे संघटन का एक विशेष अधिवेशन, उस पहाड़ के समीप जहां मसीदा का दुर्ग है, घाटी में हुआ और हमारे संघटन के ज्योज्येष्ठ वहां पधारे और

* "नज़रीन" नैज़रेथ के निवासी को कहते हैं। ईसा नैज़रेथ ही का निवासी था इस लिये "नज़रीन" शब्द ईसा के लिये प्रयुक्त होने लगा। आरम्भ में जो पुरुष ईसाई मत में प्रविष्ट हुये थे उन को भी नज़रीन कहते हैं॥

अधिवेशन में हुये सम्भाषणों को सुना और अन्त में सब को उपदेश किया कि मनुष्य बुद्धि, साधुता, और मातृभाव से सबल होते हैं। इस उपदेश को सुन कर ईसा ने प्रफुल्लित होकर कहा कि इस को हमारे पवित्र संघठन में तत्काल प्रविष्ट करा लिया जावे। ईसा के उदाहरण का अनुकरण जान ने किया और हमारे ब्योजेष्ठ की ईश्वर प्रार्थना ने ईसा को ईश्वर भक्त बनाया। संघठन के नियमानुसार अब हमारे ब्योजेष्ठ ने इस प्रकार कहाः—

आगामी नव चन्द्रोदय पर जब तुम उस पर्वत पर जहां मन्दिर बना हुआ है उपस्थित होकर अग्नि की प्रगट ज्योति का अवलोकन करोगे तब हमारे भाईयों में तुम सम्मिलित होगे। जो हमारे संघठन द्वारा दीक्षित होता हैं उस को उसी समय से अपना जीवन परोपकार के लिये अर्पण कर देना पड़ता है। अतः ईसा तुम अपने पिता जोज़ेफ़ से कहो कि उस प्रतिज्ञा के पूर्ण करने का, जो उसने कैसियर्स पर्वत पर की थीं, अब समय आगया है"।

इस के बाद वह ब्योजेष्ठ (इसीर) चला गया। और ईसा अपने घर वापिस आया। जोज़ेफ़ को वह प्रतिज्ञा याद थी उसे यह भी ध्यान था कि उस का कर्तव्य अपने भाइयों के प्रति क्या है। तब जोज़ेफ़ ने प्रथम बार ईसा को बोधित किया कि वह उस का असली पिता नहीं है।

उन्होंने, इस बात को, कि ईसा हमारे संघठन में प्रविष्ट होगया है, गौलानाइन्टों* (Gaulanites) के भय से अप्रकट रखना ही उचित समझा।

नियत समय पर सायंकाल को उन्हों ने देखा कि पहाड़ से अग्नि प्रज्वलित हो जाने के चिन्ह दिखाई पड़ते हैं अतः उन्हों ने शुश्किता से पहुंच ने के लिये यात्रा प्रारम्भ की। जब वे मन्दिर में पहुंचे तो उन्हें संघटन के श्वेत वस्त्रधारी सेवक मिले। हमारे नियमानुसार ईसा हमारे संघटन का नवशिष्य बनाया गया और उसे निम्न भांति दीक्षा दी गई:—

दोनों को नियम बतला दिये गये थे उन्हें भी बतला या गया जहां होकर उन्हें हमारे समुदाय में आना चाहिये—वहां सब भाई (संघटन के सदस्य) चार पृथक २ वर्गों में बैठे थे। ये चार वर्ग संघटन के चार श्रेणियों (Deg·ees) के अनुसार बनाये गये थे। दीक्षा मंडप पर नवचन्द्र की धीमी प्रकाश किरणें पड़ रहीं थीं। वे दोनों समस्त भाइयों के सम्मुख उपस्थित किये गये। उन्हों ने वहां अपनी प्रतिज्ञायें की। भाईयों ने जो, श्वेत वस्त्रधारण किये हुये थे, अपने २ सीधे हाथ उन की छातियों पर रक्खे। बायें हाथ अपने २ स्थान पर लटक रहे थे। इस कृत्य का तात्पर्य यह था कि सब शुद्ध हृदय होकर पवित्रता और पुण्य कृत्यों का ही अनुसरण करेंगे. और दोनों ने जो प्रतिज्ञायें की थीं उनका सार यह था कि सांसारिक धन, बल और यश से वैराग्य रक्खेंगे आजीवन उनका उद्देश्य रहस्यरक्षण और आज्ञानुवर्ति होना था॥

---

* गौलानाइट (Gaulanitos) से प्राचीन फ्रांस के निवासी का अभिप्राय प्रतीत होता है। प्राचीन काल में फ्रांस को 'गालिया' (Gallia) कहते थे और वहां के निवासी गोल (Gaul) जिसे लैटिन भाषा में 'गाल्स' (Gallus) कहते हैं, कहलाते थे। इसी गोलसे गौलानाइट शब्द का प्रयोग होता है।

हमारी साम्प्रदायिक परम्परानुकूल जब वे दोनों प्रतिज्ञा कर चुके तो आत्मपरीक्षण और अनुभवार्थ ३ दिन और रातों के लिये वे एक एकान्त गुफा में भेज दिये गये। तीसरे दिन सन्ध्या समय वे फिर हमारे समुदाय के सम्मुख कतिपय प्रश्नों के उत्तर देने और प्रार्थना करने के लिये लाये गये॥

प्रामोय चुम्बन के बाद उन्हें श्वेत वस्त्र धारण कराये गये और शुद्धता और पवित्रता का चिन्ह, कर्त्ती और संघटन की सेवा के चिन्ह उन्हें दिये गये। पवित्र गीतों के गान करके उन्हों ने स्वयं प्रीतिभोज में भाग लिया। क्योंकि हमारे संघटन के परम्परानुसार हमारे भाइयों में से उस में कोई भाग नहीं लेसकता था। इस के बाद वह कार्य समाप्त हुआ। तत्पश्चात् उन्हें आत्मसंयम के नियम और मर्य्यादाओं की शिक्षा दीगई जिन में होकर उन्हें गमन करना होगा। उन्हें निर्जन स्थान में रहने की शिक्षा दीगई, उन्हें बतलाया गया कि संसारिक मनुष्यों से सर्वथा पृथक् होकर उन्हें एक वर्ष तक स्थान विशेष पर संघटन के ज्योर्येष्ठ (इसीर) के निकट रहना होगा जिस से वे ज्ञान प्राप्त करके संघटन का उच्च दर्जा प्राप्त करने के योग्य बन सकें॥

दोनों ने शीघ्रता के साथ दैवी शिक्षाओं के प्राप्त करने में उन्नति की। ईसा स्पष्टवादी और शुद्धान्तःकरण था परन्तु जान ने अपने को कठोर गम्भीरता के अभ्यास और एकान्त वास के लिये अर्पण किया। जब परीक्षा और आत्म संयम का वर्ष व्यतीत होगया वे फिर नव चन्द्रोदय पर संघटन में सम्मिलित किये गये। उन का इस बार का

यह प्रवेश वास्तविक सदस्य की स्थिति में था और इस लिये उच्च शिक्षा के लिये दीक्षित किये गये ॥

उन्हों ने गत वर्ष का अपना पूरा चरित्र विवर्ण दिया और संघटन के समस्त नियमों का पालन किया और प्रार्थना, गान और प्रीतिभोज में भाग लेते रहे तब वे गुप्त उपासना भवन में पहुंचाये गये और उन्हें धार्मिक ग्रन्थों के अन्वेषण करने का उपदेश मिला। हमारे संघटन के नियमानुसार इस प्रकार प्रविष्ट सदस्य या तो शुभ उद्योग और साहचर्य (Fellowship) के लिये संघटन में रहते हैं अथवा अपने निर्वाचनानुसार संसार में भ्रमण करके शिक्षा और शांति का विस्तार करते हैं ॥

तदनुकूल ईसा ने अपने लिये उपदेश देने का कार्य्य यथेष्ट समझा और जान संघटन में ज्योज्येष्ठ (Elder) की भांति रहा। ईसा ने अनुभव किया था कि दिव्यात्मा (Spirit of God) उस से कह रहा है कि संसार का उपकार कर इस लिये उस ने हमारे संघटन के मन्तव्यों का सर्व साधारण में प्रचार करना अपने लिये रुचिकर समझा ॥

तब यह हुआ कि जान जूथा को निर्जन स्थान में एकान्त वास के लिये लौट गया और ईसा नैज़रथ को चला गया। यहां उसने सप्रताप अपनी साधुता प्रमाणित की और संघटन के साथ की हुई अपनी प्रतिज्ञा का पूरा पालन किया ॥

उस का एक मित्र लाज़रस (Lazarus) था जिस के एक बहन थी जिस का नाम मैरी (Mary) था वह

ईसा से प्रेम करने लगी और ईसा भी हृदय में उस से प्रेम रखने लगा। परन्तु हमारे संघटन की मर्य्यादानुसार एक फ़क़ीर को, अपने साथ अपनी इच्छानुसार पत्नी के रखने की आज्ञा नहीं है क्योंकि इस से कार्य्य में बाधा पड़ने की सम्भावना रहती है। अतः अवस्था यह हुई कि संघटन की निःस्वार्थ सेवा करने के उच्च भावों से प्रेरित होकर ईसा ने उस देवी के प्रेम को अतिक्रम किया तो भी प्रेम प्रयास सुगम निवारणीय नहीं था इस लिये ईसा और मैरी दोनों एक दूसरे से प्रथक होते समय फूट २ कर रोये॥

भाइयों! इन सब बातों की सूचना मैंने तुम्हें इस लिये दी है कि तुम निःसन्देह होकर जान सको कि ईसा हमारा भाई था और हमारे संघटन से सम्बन्धित था। अतः समस्त सन्देह और भ्रम जो इस विषय में हों समाप्त होजाने चाहियें। हमारे भाई ईसा ने स्वेच्छानुसार मृत्यु कष्ट सहन किया जिस से वह हमारे संघटन की शिक्षाओं का यश विस्तार करे और हम अपने सुकृत्यों का बड़े से बड़ा पारितोषिक यही समझते हैं कि हम भी इसी प्रकार उसी उद्देश्य के लिये आत्म बलिदान करें। तुम ने वह वृत्तान्त सुन लिया है जो यहूदियों और ईसा के शिष्यों ने ईसा के सम्बन्ध में दिया है कि उन्हों ने उस के बाद उसे पहाड़ों में और मार्ग पर देखा है जब वे उसे मरा हुआ समझ चुके थे। इन घटनाओं का यथार्थ ज्ञान, जो सर्व साधारण से अविदित है दैवी शक्ति द्वारा हमें प्राप्त हुआ है और यह हमारा कर्तव्य है कि तुम्हारे प्रश्नों के उत्तर में यथार्थ घटनाओं की सूचना हम तुम्हें देवें। यद्यपि मैं यह पत्र लिख रहा हूं परन्तु मेरे नेत्र

अश्रुपूर्ण हो रहे हैं और प्रतीत होता है कि मैं अपने भाई को उस की यातनाओं और विशेष कर मृत्यु की पीड़ा में देख रहा हूं। और मेरा प्रभावित हृदय, उस महान् पुरुष की वार्ता और आत्म बलिदान की पुनः स्मृति से रह रह कर व्यथित होरहा है। वह ईश्वर का भेजा हुआ और उसी का निर्वाचित था और हम सब के हृदय उस के प्रेम से पूर्ण और उस की शिक्षाओं और उस के प्राकृतिक और तात्विक ज्ञान से प्रभावित थे॥

मेरे भ्राताओं! यहां जेरोसलीम में, सात पासोवरों के बीतने से पूर्व जो घटनायें घटित हुई उन्हें मैंने अपनी आंखों से देखा है परन्तु मैंने उन्हें गुप्त इस लिये रक्खा है कि अधिक पुरुष उसे न जान सकें। यहूदी और मूर्तिपूजक के केवल उन्हीं बातों पर विश्वास करते हैं जिन्हें स्वयं उन्हों ने अपनी आखों से साक्षात् किया हो और इस लिये वे देवताओं में भी, सिवाय उन के जिन से वे इन्द्रियों से प्रत्यक्ष कर सकें हैं, विश्वास नहीं रखते। अतः भ्राताओं! ईश्वर की स्तुति करो कि वार्ता इस प्रकार घटित हुई :—

इस लिये प्रेमी सर्व साधारण से यह रहस्य अप्रगट रक्खा गया था कि कहीं ईश्वर सम्बन्धी उन के विश्वास में कुछ शिथिलता न आये। क्योंकि तुम जानते हो कि अनेक सज्जन और ईश्वर भक्तों ने ईसा के जीवन और मरण सम्बन्धी घटनाओं को लिखा और याद कर रक्खा है परन्तु उन्हों ने जो कुछ लिखा और याद कर रक्खा है उन का आधार केवल जन प्रवाद है जो मूढ़ विश्वास वशात् घटनाओं को बढ़ाने और उन के बिगाड़ लेने से प्रचलित रूप में आया है। और

आदर और भक्ति भाव से वे इन सब बातों पर विश्वास कर लेते हैं जो अपने प्रियतम स्वामी के लिये सुनते हैं यही बात उन सभों पर भी चरितार्थ होती है जो सर्व साधारण से चुन लिये गये और जिन्हें ईसा का शिष्य होना कहा जाता है। उन में से अधिकांश ने उस का जीवन और मृत्यु वृत्तान्त पारम्पर्य सुना अर्थात् एक दूसरे से सुनते आये। परन्तु कुछ और पुरुष थे जो घटनाओं के घटित होने के समय उपस्थित थे परन्तु उन्हें मुख्य २ घटनाओं की (जो पीछे प्रसिद्ध हुईं) सूचना भी नहीं दी गई॥

गुप्त रीति से अब मैं तुम्हें बतलाता हूं कि क्या मैंने और हमारे अरीमथिया के यूसफ ने देखा और साक्षात् किया॥

तुम जानते हो कि एक "इसीन" जब तक कि किसी बात की सत्यता का उस को दृढ़ निश्चय न हो, वह उसे अपने मुंह से नहीं निकालता। प्रत्येक पुरुष को जिसे वाणी प्राप्त है ईश्वर स्तुति करनी चाहिये और उस के गुणों का प्रकाश करना चाहिये। यहां तक कि उस के मुख में ईश्वर ही ने वाणी भी दी है॥

निःसन्देह हम अपने प्रियतम भाई को शत्रुओं की प्रतिहिंसा से बचाते यदि सब कुछ इतनी शीघ्रता से न होजाता और हमारे नियम भी हम को लोक सम्बन्धी कार्य्यों में हस्तक्षेप करने से न रोकते। फिर भी हमने उस की गुप्त रीति से रक्षा की। विश्व की दृष्टि में वह, जिस दिव्य प्रेरणा को लेकर आया था, उसे उसने पूर्ण कर

दिया। निःसन्देह यदि एक पुरुष केवल अपने धार्मिक विश्वास के लिये मारा जाता है तो इस मृत्यु से ईश्वर की कुछ महिमा वह नहीं प्रकट करता परन्तु यदि वह ईश्वर की पूर्ण भक्ति रखता है और उस के प्रति श्रद्धा से हृदय भरपूर रखते हुये कष्ट उठाता हुआ अपने धार्मिक विश्वास के लिये आत्म बलिदान करदेने तक के लिये तय्यार है तो यही निश्चय संसार की दृष्टि में हमारे काम को पूर्ण हुआ बतलाने के लिये पर्य्याप्त है ॥

इस लिये ध्यान देकर उसे विचारो जो मैं अब तुम से कहता हूं तब तुम स्वयं उन जन अपवादों का निर्णय कर सकोगे जो यहां और रोम से तुम तक पहुंचे हैं ॥

{ यहां बहुतसी खाली जगह असल पत्रों में छूटी हुई है जहां के पत्रे समय के नाशक प्रभाव से नष्ट होगये प्रतीत होते हैं। और शेष पत्रों से उनकी पूर्ति किया जाना सम्भव नहीं है॥ }

प्रस्थान समुदाय (Procession) में दण्डाज्ञा प्राप्त ईसा और दो चोर थे। प्रस्थान मार्ग घाटी के प्रवेश द्वार से बाहर जेरोसलीम से गोलगोथा तक था। गोलगोथा स्थान ही सूली दिये जाने के लिये नियत था। जब ईसा को सूली के भार से दबा और झुका जाता हुआ स्त्रियों ने देखा तो उन्हों ने उच्च स्वर से रुदन करना प्रारम्भ किया॥

कोड़ों की मार से जो अघात उस के शरीर में होगये थे उन से वेग के साथ रक्त प्रवाहित होरहा था। एक बेहद

पहाड़ के किनारे, जहां कुछ भी नहीं उत्पन्न होता था और जिस को "जील्यून" कहते थे और जो उत्तर की ओर है और जिस में होकर सुनसान मृत्यु की घाटी को मार्ग आना है वह प्रस्थान समुदाय ठहरा। ईसा भूमी पर गिर पड़ा। उस का पीडित शरीर बलहीन था॥

रोमन सिपाही सूलियों के लिये स्थान की खोज करने लगे। स्थान नियत करलेने पर उन्हों ने इच्छा की कि कष्ट-भोगियों के प्रति सहानुभूत प्रदर्शित करें और उस का मार्ग उन्हों ने यह निश्चय किया कि उन्हें एक २ प्याला शराब का दे देवें जिस से वे चेतना शून्य होजायें। इस प्रकार अचेतन करने की प्रथा, सूली देने से पूर्व वहाँ प्रचलित भी थी। यह पान, खट्टी मद्य और एक और औषधि (Wormwood) को मिलाकर बनाया जाता था और इसे टोसका (Toska) कहते थे। परन्तु ईसा ने इसे स्वीकार नहीं किया उसने सोचा कि जब वह अपने विश्वास और सचाई के लिये मर रहा है तो शराबी बन कर क्यों मरे और इस लिये उसने मद्यपान करना उचित नहीं समझा। उस को इस निश्चय का ज्ञान हमारे संघटन से प्राप्त होचुका था और जबकर उसने और भी निश्चय कर लिया। सूली गाड़ी जारही थी और वह समय जो ईसा के प्राणदण्डार्थ नियत था आगया था। पहला कार्य्य इस सम्बन्ध में जो करना था वह अपने शरीर से अपने वस्त्रों का फाड़ना था परन्तु इस के लिये नियमानुसार यह आवश्यक था कि सिपाहियों के वस्त्र जो कोड़ा लगने के बाद उसने पहने थे उन्हें उतार कर उस के असली वस्त्र पहनाये जावें और तब वे फाड़े जावें॥

'सैनहीड्रीन'"* (Sanhedrim) के सेवकों की प्रार्थनानुसार ईसा के लिये जो सूली तय्यार की गई थी वह चोरों की सूलियों के मध्य में यह प्रदर्शित करने के लिये रक्खी गई कि वह उन से बड़ा अपराधी था ॥

ईसा के लिये जो सूली थी उस में और भी विशेषता की गई थी और वह यह थी कि साधारण रीति से लम्ब-रूपेण जो कड़ी सूली में लगाई जाती है वह सूली से ऊपर नहीं पहुंचती परन्तु ईसा की सूली में वह कड़ी इस भांति लगाई गई थी कि ऊपर तक पहुंचती थी। तब उन्हों ने ईसा को पकड़ा और ऊपर उठाकर एक छोटे खम्भे पर रक्खा जो सदैव प्रत्येक सूली के सन्मुख लगाया जाता है जिस का उद्देश्य यह होता है कि अपराधी का शरीर जब वह रस्सियों से कसा जाता है उस पर ठहरा रहे। उन्हों ने प्रथम उस की बांहें सामान्यतया दृढ़ रस्सा से बांधीं और इतनी कस कर बांधीं कि समस्त रक्त जो बाहुओं में प्रवाहित होरहा था हृदय को लौटने लगा और इस प्रकार उसे श्वास लेना भी कठिन होगया। इसी प्रकार उन्हों ने उस के पांवों को बांधा और टांगों को तक आघात पहुंचाये हुये इस प्रकार रस्सियों से उसे कसा कि उस का भी रक्त प्रवाह बन्द होगया। तत्पश्चात् उन्हों ने मोटी लोहे की कीलें उस के हाथों में घुसेड़ीं परन्तु पैरों में नहीं क्योंकि सामान्यतया पांओं में नहीं घुसेड़ी जाती हैं। मैं यह बात विशेष रीति से भाइयो! तुम्हें इस लिये लिख रहा हूं कि जन प्रवाद यह था कि उस के पैरों में

*हिब्रू भाषा में सभापति को 'सनहीड्रीं' कहते हैं— यहां यहूदियों के सभापति से तात्पर्य है।

भी कीलें घुसेड़ी गई थीं और तब वह उसी समय अकथनीय कष्ट भोगने के लिये लटका दिया गया—

सूर्य्य का ताप उस दिन प्रचण्ड और क्लेश प्रद था॥

लोक परम्परानुकूल जब सिपाहियों ने उस के वस्त्रों को अपने अधिकार में लिया तो उन्हों ने उस के लबादे को चार भागों में विभक्त कर लिया परन्तु कुरता बुना हुआ था फाड़ा नहीं जासका था अतः उस के लिये उन्हों ने चिट्ठियां डाल लीं॥

मध्यान्होत्तर काल होने पर जब सूर्य्य के ताप में शिथिलता आनी प्रारम्भ हुई थी नगर से बाहर दर्शकों का बड़ा समूह वहां उपस्थित होगया। सब वहां बड़े कौतूहल में थे। अनेक पुजारी भी वहां आगये थे जो यहूदियों को पापकारी प्रतिहिंसा का दृश्य अवलोकन करते हुये उस (ईसा) का उपहास कर रहे थे। उन्हों ने उसे नीचे झुका दिया क्योंकि वह दुख से पीड़ित होरहा था और दर्शकों को भी उस का उपहास करने का परामर्श दिया। ईसा ने टकटकी लगाकर आकाश की ओर दृष्टि रखते हुये इस कष्ट को शान्ति से सहन किया। उसने अपनी जाति के उन स्त्रियों के शब्द जो जैलीली से आईं और कुछ अंतर से खड़ी हुई, अपने हाथ मलते हुये, उस के लिये विलाप कर रही थीं नहीं सुने। वे स्त्रियां उस की अकाल मृत्यु समझ कर ही विलाप कर रही थीं॥

ये यातना का रुदन और विलाप कुछैक अश्वारोहियों के घोड़ों की टापों की नाद से दब गया, जो बरछा सह

की ओर बढ़े आरहे थे। यह यहूदियों का मुख्य पुजारी "कैयाफ़स" (Caiaphas) था जो बहुसंख्या में अनुचर और रक्षक वर्ग लेकर सूली प्राप्त ईश्वर पुत्र का उपहास करने आया था। और यहां तक कि एक सूली प्राप्त तस्कर भी उस का उपहास करने में उन के साथ सम्मिलित होगया क्योंकि वह गुप्त आशा बांधे हुये था कि ईसा उन्हें और अपने आप को भी अपनी अलौकिक शक्तियों से सूली दण्ड से बचालेगा ॥

अब रोमनों ने यहूदियों को धिक्कारने के उद्देश्य से सूली पर स्थित ईसा के शिर पर एक पट्टिका स्थिर कर दी जिस पर भिन्न २ चार भाषाओं में "यहूदी नरेश" शब्द लिख दिये। यद्यपि इस से पुजारियों की कोपाग्नि प्रज्वलित होगई और वे बड़े आवेश में आये परन्तु वह पिलेट* (Pilate) से डरते भी थे इस लिये उन्हों ने अपना क्रोध ईसा को अपमान सूचक वचन कहने द्वारा ही निकालना उचित समझा। रात्रि का अन्धकार पृथ्वी पर फैला और जन समुदाय, घटनास्थल से जेरोसलीम को लौटने लगा परन्तु ईसा उस के शिष्य और मित्र और हमारे संघटन के वृद्धगण "गोलगोथा" ही में ठहरे रहे ॥

हमारा संघटन एक नवीन बस्ती में उपासना और प्रीतिभोज में भाग लेने के उद्देश्य से संघठित था। ईसा ने जैलीली की स्थन करने वाली स्त्रियों में से अपनी माता को

*जेरोसलीम का शासक (Governor) था और रोम साम्राज्य के प्रतिनिधि रूप में वहां था।

पहचाना जो, शान्त खड़े हुये जान के पास, थी। ईसा क्लेश से पीड़ित होकर चिल्ला उठा और बाईसवां भजन (22nd Psalm) का पाठ करते हुये, उसी के द्वारा ईश्वर से प्रार्थना की कि उसे इस घोर कष्ट से मुक्त करे। अब भी वहां पहाड़ पर कुछ फ़ैरीसी उपस्थित थे और उन्हों ने फिर उस का उपहास करना विचारा। क्योंकि वे आशा कर रहे थे कि ईसा सूली से उतर आयेगा "सांसारिक मनुष्यों का उद्धारक" और उन की आशानुकूल यह नहीं हुआ इस लिये उन्हों ने समझा कि वे धोखे में थे और इसी आधार पर उन्हें क्रोध आया। अस्तु उस समय उष्णता का प्रकोप था उस का वर्धमान वेग असह्य प्रमाणित होरहा था पृथ्वी और वायु मानों अग्निमय होरहे हैं और ऐसा होना तत्वों के विशुद्ध बनाने के लिये आवश्यक ही था॥

"इसीर" भाई अपने प्राकृतिक और तात्त्विक ज्ञान से जानते थे कि एक भूकम्प होने वाला है जैसा कि इस से पूर्व हमारे पिता और प्रपितामह के समय में आया था। तमोमये रात्रि का पृथ्वी पर विस्तार होचुका था तभी भयानकता से पृथ्वी में कम्प आने प्रारम्भ हुये जिस से रोमन 'योधशताधीश" तो इतना व्याकुल होगया कि अपने देवताओं से प्रार्थना करने लगा। उन्हें विश्वास होगया कि ईसा देवताओं का प्रिय था। अधिकांश भयभीत नरनारी शीघ्रतर घटनास्थल से जेरोसलीम लौट गये और योधशताधीश ने जो एक उदार और करुणा शील पुरुष था जान को परवानगी दी कि ईसा की माता को सूली के पास लेजावे। ईसा प्यास से व्याकुल था उस के होंठ सूख रहे थे और पीड़ा

के शरीर का प्रत्येक अवयव जल भुन रहा था। हिसोप (एक प्रकार का वृक्ष) की लम्बी पतली शाखा में इसफंज लगा और उसे सिरके में डुबोकर एक सिपाही ने ईसा को दिया उसी से उसने अपनी प्यास बुझाई। उसने अपनी माता को जान की देख भाल में रखने के लिये इच्छा की। उस समय अन्धकार बढ़ता जारहा था। यद्यपि उस रात आकाश में पूर्ण चन्द्र उदय होना चाहिये था परन्तु मृत समुद्र से लाल रङ्ग का कुहरा उठ रहा था। जेरोसलीम के चतुर्दिश स्थित पहाड़ों के किनारे, भयानक रीति से कांप उठे। और ईसा का शिर उस की छाती पर गिर पड़ा। उसने अन्तिम बार पीड़ा से व्यथित होकर आह की और संसार से चल दिया।

वायु में फुंकारने का सा शब्द सुनाई दिया और वे यहूदी जो अब तक वहां थे भयभीत होगये। उन का विश्वास था कि बुरी रूहें, जो आकाश और पृथ्वी के मध्य रहती है, जनता को दण्डित करने के लिये प्रस्थान कर रही हैं। वायु में वह विलक्षण और असाधारण शब्द था जो भूकम्प से पूर्व सुनाई दिया करता है। शीघ्र ही पहाड़ों में कम्प होना प्रारम्भ हुआ और निकटवर्ती ग्राम और नगर हिलने लगे। मन्दिर की चौड़ी दीवारें फट गई पर्दा भी फटकर अपनी जगह से गिर पड़ा। यहां तक की पहाड़ की चट्टानें भी फट गईं। और चट्टानों में खोद कर बनाई हुई कबरें भी नष्ट होगई और उन में रक्खे हुये शवों का भी यही परिणाम हुआ। यहूदियों ने इन घटनाओं को अलौकिक समझा और रोमन योधशताधीश ने अब ईसा को अलौकिक पुरुष और

निरपराधी होने में विश्वास किया। और उस की माता को सान्त्वना दी। यद्यपि हमारे भ्राताओं ने इन घटनाओं की वास्तविकता जनता पर प्रगट करने का साहस नहीं किया और उसे गुप्त रक्खा तो भी वे इस प्राकृतिक घटना के कारणों को पूर्ण रीति से जानते थे। और उन्हें अपने भाई (ईसा) में, बिना उस में किसी अलौकिकता की कल्पना किये ही, विश्वास था॥

प्रिय भ्राताओ! तुम ने हमें उपालम्भ दिया है कि हमने गुप्त साधनों से अपने मित्र को मृत्यु दण्ड से क्यों नहीं बचाया। परन्तु मैं इस के उत्तर में तुम्हें केवल अपने संघटन के नियमों का संकेत करता हूं जो प्रकट रीति से कोई कार्य्य करने की आज्ञा नहीं देते। और राज्य कार्य्य में भी हस्ताक्षेप करने से रोकते हैं। फिर भी हमारे दो अनुभवी और प्रभाव शाली भाईयों ने, पिलेट पर और यहूदियों की राज्यसभा पर भी अपना पूरा २ प्रभाव डाला जिस से ईसा बच जावे परन्तु निष्फल हुआ। ईसा ने स्वयं भी यही चाहा कि उसे अपने विश्वास के लिये मृत्यु दण्ड भुगतने दिया जावे। और इस प्रकार उस ने संघटन के नियम का पूरा २ पालन किया। क्योंकि तुम जानते हो कि पुण्य और सत्यता के लिये मरना महान् बलिदान है जो एक भाई कर सका है॥

जोज़ेफ नाम का एक पुरुष "अरिमेथिया" (Arimathea) का निवासी था वह सम्पन्न और यहूदी राज-सभा का सदस्य भी था और प्रजा में भी उस का बहुत मान था। वह बड़ा दूरदर्शी था और किसी पार्टी से सम्बन्धित न था,

यह हमारे संघटन का एक गुप्त सदस्य था और हमारे नियमानुकूल आचरण रखता था। उस का मित्र "निकोडेमस" (Nicodemus) उच्च श्रेणी का विद्वान् था यह भी हमारे संघटन के प्रथम श्रेणी के सदस्यों में से था। अस्तु भूकम्प के बाद यह घटना हुई कि जोज़ेफ़ और निकोडेमस सूली के निकट आये। उस समय अधिक पुरुष घटनास्थल से लौट चुके थे। उन को सूली प्राप्त के मृत्यु की सूचना हमारे एक भ्राता की वाटिका में मिली थी जो "फ़ेलथैरी" के निकट ही हैं। यद्यपि उन्हों ने इस परिणाम को सुन कर उच्च-स्वर से विलाप किया परन्तु फिर भी उन्हें यह बात विलक्षण प्रतीत हुई कि सात घन्टे भी पूरे जिसे सूली पर लटकाये हुये न हुये हों और वह मर चुका हो। उन्हों ने इस का विश्वास न कर के ही शीघ्रता से घटनास्थल के लिये प्रस्थान किया। वहां उन्हों ने अकेले जान को पाया। उन्हों ने यह स्थिर कर के कि देखें उस शरीर की जिसे वे बहुत प्यारा समझते थे, अब क्या अवस्था हो गई। जोज़ेफ़ और निकोडेमस ने ईसा के शव की जांच की। निकोडेमस बहुत प्रभावित हुआ और जोज़ेफ़ को पृथक् लेजाकर उस से कहा। "जितनी* निश्चित जीवन और प्रकृति सम्बन्धी मेरी विद्या है उतनी ही निश्चित उस के बचा लेने की सम्भावना है"। परन्तु जोज़ेफ़ उस का तात्पर्य्य नहीं समझा और उसने हम को चितौनी दी कि जो कुछ हमने सुना है उसे "जान" से नहीं कहना चाहिये॥

---

*असल शब्द ये हैं:— "As sure as is my knowledge of life and nature, so sure is it possible to save him".

अवश्य यह एक गुप्त रहस्य था कि मृत्यु से अपने भाई की रक्षा करली जावे। निकोडेमस ने उच्च-स्वर से कहा कि "हमारे पास शीघ्रता से यह शव इस प्रकार होना चाहिये कि हड्डियां न टूटने पावें क्योंकि अब भी यह बचा लिया जासकता है"। तब सावधानता से उस की रक्षा के सम्बन्ध में धीरे २ उसने कुछ बातें कीं। और कहा कि 'अयशस्करी रीति के साथ दफ़न होने से बचाया गया" ॥

उसने जोज़ेफ़ को प्रोत्साहित किया कि अपने लाभा-लाभ का विचार छोड़ कर अपने मित्र के बचाने का उद्योग करे और शीघ्र ही 'पिलेट' के पास जाकर उस से अनुमति प्राप्त करे कि वह आज ही रात ईसा के शव को सूली से लेकर चट्टान में खोदी हुई एक कब्र में दफ़न कर देवे यह चट्टान जोज़ेफ़ ही की थी ॥

मैंने निकोडेमस का तात्पर्य्य समझ लिया। यह काम "जान" के लिये छोड़ा गया कि वह सूली की रक्षा करे और सिपाहियों को ईसा के शव की हड्डियां तोड़ने से रोके ॥

रात्रि में किसी शव को सूली पर रहने देने का नियम नहीं और दूसरे दिन रविवार था और इस लिये साधारणतया सिपाही शव को शीघ्र सूली से उतार कर गाड़ देवें। यहूदियों की राज-सभा ने "पिलेट" से याचना की कि सिपाहियों को आज्ञा दी जावे कि सूली प्राप्त मृत पुरुषों की हड्डियां तोड़ कर उन्हें गाड़ देवें। ज्यों ही जोज़ेफ़ और निकोडेमस में से प्रत्येक ने अपने २ निश्चित, पवित्र उद्देश्यों

के सिद्धर्थ प्रस्थान किया एक सिपाही आया और योधशताधीश के लिये आज्ञा लाया कि शवों को सूली से उतार कर गड़वा देवें ॥

मुझे इस सूचना के प्राप्त होने से बड़ी चिन्ता हुई कि यदि सावधानी से शव न उतारा गया तो वह न बचाया जा सकेगा और फिर बचने की कुछ भी आशा न रहेगी यदि उस की हड्डियां तोड़ दी गईं ॥

जान संभ्रान्त चित्त और दुखी था इस भय से नहीं कि ईसा के बचाने का प्रस्तावित उद्योग विफल होजायगा क्योंकि इस की उसे जानकारी न थी उस के दुखित होने का कारण यह था कि वह समझने लगा था कि अब उसे अपने मित्र के शव को खण्डिताङ्ग होते देखना पड़ेगा क्योंकि जान का विश्वास था कि ईसा मर गया। ज्यों ही वह सिपाही आया था मैं उस के पास गया उस समय मुझे आशा थी कि जोज़ेफ़ पिलेट से मिल चुका होगा जिस की वास्तव में कुछ भी सम्भावना न थी। मैंने जाकर उस से पूछा तो उस ने उत्तर दिया कि "मैं पिलेट के पास से नहीं किन्तु उस के मन्त्री के पास से आया हूं"। मन्त्री ही ऐसे साधारण कार्य्यों का निपटारा अपने अधिकार से शासक (Governor) की ओर से कर दिया करता है"। योधशताधीश को मेरी विकलता का ज्ञान होगया वह मेरी ओर देखने लगा मैंने मित्रता के ढंग से उस से कहा "तुम जानते हो कि यह पुरुष, जिसे सूली का दण्ड मिला है, एक असाधारण व्यक्ति था अब उस के साथ अप्रिय आचार मत करो। जनता में से

एक सम्पत्तिवान् पुरुष पिलेट के पास गया हुआ है कि धन देकर शव को प्राप्त करलेवे और शिष्टाचारानुकूल उसे दफ़न करे" ॥

प्रिय भ्राताओ! यहां मैं तुम्हें यह बता देना चाहता हूं कि पिलेट प्रायः सूली दण्ड प्राप्त पुरुषों के शव मृत-पुरुष के मित्रों के हाथ बेच देता था और वे मित्र शव को लेकर उसे उचित रीति से दफ़न किया करते थे। योधशताधीश, उन घटनाओं को देख कर जो ईसा को सूली देने के पश्चात् घटित हुई, ईसा को निर्दोष समझने लगा था अतः उस का व्यवहार मेरे साथ मित्रता का-था इस लिये जब सिपाहियों ने दोनों चोरों के शवों को भारी लाठियों से पीट कर उन की हड्डियां टुकड़े २ कर दीं तो उसने सिपाहियों के पास जाकर उन से कहा कि "ईसा की हड्डियां मत तोड़ो क्योंकि यह मर चुका है"। उसी समय एक व्यक्ति को शीघ्रता के साथ पेन्टोनिया के राज-महिलों से कैलवैरी (वध्यस्थल) की ओर आते देखा। वह योधशताधीश की ओर बढ़ा और उसे आज्ञा दी कि उसे शीघ्रही पिलेट ने बुलाया है। योधशताधीश ने आज्ञा सुनकर आज्ञा-वाहक दूत से पूछा कि इतनी रात्रि बीतने पर, असमय पिलेट को, किस लिये उस की आवश्यकता है। दूत ने कहा कि वह यह जानना चाहता है कि ईसा वस्तुतः में मरचुका है या नहीं। योधशताधीश ने कहा कि "वह मर चुका है-इस लिये हमने उस की-हड्डियां नहीं तोड़ीं हैं"। मरे हुये होने का अधिक निश्चय करने के लिये सिपाहियों में से एक ने उस के शव में इस प्रकार भाला चुभोया कि वह उस के पुट्ठे या नितम्ब में घुस गया

परन्तु शरीर निश्चेष्ट ही रहा। इस योधशताधीश ने ईसा के मरे हुये होने का निश्चित चिह्न समझ लिया और शीघ्रता के साथ अपना उत्तर देने के लिये चला गया। इस (भाले के) क्षुद्र अघात से रक्त और जल प्रवाहित होने लगा जिस से "जान" तो आश्चर्य में पड़ गया परन्तु मेरी आशीलता लह-लहाने लगी। जान उस शिक्षा से, जो उसे हमारे संघटन में प्राप्त हुई थी, जानता था कि मृत शरीर से कुछेक रक्त की गाढ़ी बूँदों के सिवा; आघात पहुंचने पर, कुछ नहीं निकलता परन्तु यहां जल भी प्रवाहित था। मैं बड़ी उत्कण्ठता से चाह रहा था कि जोज़ेफ़ और निकोडेमस लौटें। निदान कुछेक जलीली नगर की स्त्रियां बिथेनियां से लौटती हुई दिखाई दीं जहां से वे ईसा की माता मरियम को हमारे "इसीर" मित्रों की देख भाल में लाई थीं? उन स्त्रियों में "लाज़रस" की भगनी मेरी भी थी जो ईसा से प्रेम रखती थी वह उच्च-स्वर से रोने लगी। एक ओर मेरी रोरही थी और रोकर अपनी आन्तरिक विथा दूर कर रही थी दूसरी ओर जान विना किसी दूसरे विचार के टकटकी लगाये ईसा के नवाघात की ओर देख रहा था कि इसी बीच में जोज़ेफ़ और निकोडेमस शीघ्रता करते हुये लौट आये॥

जोज़ेफ़ ने अपने गौरव की रक्षा के साथ पिलेट से ईसा का शव मांगा और उसने उस की मृत्यु का निश्चय कर के शव को विना उस का कुछ मूल्य लिये जोज़ेफ़ को दे दिया। क्योंकि पिलेट जोज़ेफ़ का बड़ा सम्मान करता था और गुप्त रीति से इस मृत्यु दण्ड के लिये पश्चात्ताप भी करता था। जब निकोडेमस ने आघात से रक्त और जल

प्रवाहित होते देखा उस का चित्त नई आशाओं से प्रफुल्लित होगया। और उसने भावी-शुभ परिणाम का विचार करते हुये उत्साह वर्धक शब्दों में बातें की। और जोज़ेफ़ को, जान से कुछ अन्तर पर लाकर जहां मैं खड़ा था, शीघ्रता-पूर्ण धीमी वाणी से कहा "प्रिय मित्रों! प्रसन्न होओ और मुझे कार्य्य करने दो ईसा मरा नहीं है। वह मरा हुआ सा इस लिये प्रतीत होता है कि बलहीन होचुका है"। निको-डेमस ने यह भी कहा कि "जोज़ेफ़ तो पिलेट के साथ रहा और मैं शीघ्रता से अपनी नवबस्ती में जाकर ऐसी औषधियां ले आया जो ऐसी अवस्थाओं में उपयोगी होसक्ती थीं। परन्तु मैं तुम्हें सावधान करता हूं कि जान से यह बात न कहना कि हम ईसा के मृत-शरीर को पुनर्जीवित करने की आशा करते हैं कदाचित् वह इस नवजात प्रसन्नता को छिपा न सके। और यदि सर्व साधारण में यह बात फैल गई तब हमारे शत्रुगण उस के साथ हम को भी मृत्युदण्ड से दण्डित करेंगे"॥

तत्पश्चात् वे शीघ्रता से सूली की ओर गये और चिकित्सा शास्त्र की मर्य्यादानुसार उन्हों ने उस के शरीर से बन्धनों को खोला और हाथों से कीलें निकाल दीं और बड़ी सावधानी से शव को भूमि पर रक्खा। और स्वच्छ-पट्टियों के बड़े २ टुकड़ों पर उसने आघातपूरक गन्धयुक्त द्रव्यों और मरहमों को फैलाया जो वह अपने साथ लाया था और जिस का प्रयोग केवल हमारे संघटन ही को ज्ञात था॥

इन पट्टियों को उसने ईसा के शरीर से बांध दिया छल के साथ प्रकट यह करते हुये कि ये पट्टियां उसने शव को

जीर्ण और मलिन होने से बचाने के लिये बांधी हैं। और यह कि भोज के पश्चात् वह मसाले और सुगन्धित पदार्थ शरीर में भर के उस की रक्षा का प्रबन्ध करेगा॥

ये सुगन्धित पदार्थ और मरहम आघातों को भर कर ही ठीक कर देने का अपूर्व गुण रखते थे और हमारे "इसीर" भाई इस का प्रयोग किया करते हैं क्योंकि वे चिकित्सा शास्त्र के नियमों से अभिज्ञ हैं। इन का प्रयोग वे इस लिये किया करते थे कि मृतवत् मूर्छा को दूर कर के रोगी को चेतनवस्था में ला देवें॥

जोज़ेफ़ और निकोडेमस उस के मुख की ओर झुके हुये थे और उन के अश्रुपात हो हो कर उस के मुख पर पड़ रहे थे परन्तु उनके इस प्रकार झुकने का तात्पर्य्य यह था कि वे अपने श्वास फूंक २ कर उस के शरीर के भीतर गर्मी पहुंचा रहे थे। अब भी जोज़ेफ़ को ईसा के अनुमानित मूर्छा मुक्त होकर पुनर्जीवित होजाने में सन्देह था परन्तु निकोडेमस उसे उत्साहित करता हुआ कह रहा था कि उद्योग बल पूर्वक करता जावे। निकोडेमस ने कील-कमुक्त हाथों में भी सुगन्धवस्तुओं (Balsam) का विलेपन किया परन्तु उसने उस आघात की पूर्ति करना सम्प्रति उचित नहीं समझा जो पुट्ठे पर भाले से किया गया था क्योंकि उसने विचारा था रक्त और जल प्रवाह श्वासोच्छ्वास लेने में सहायक और पुनर्जीवित करने में लाभदायक होगा॥

अपनी यात्रा और क्लेश से पीड़ित "जान" को विश्वास नहीं था कि उस का मित्र पुनर्जीवित होजायगा

और उसे इस लिये भी आशा नहीं थी कि स्वर्ग (School) में मिलने से पूर्व उसे देख सके ॥

तत्पश्चात् शव चट्टान में बनाई हुई क़बर में रक्खा गया। इस चट्टान का स्वत्वाधिकारी जोज़ेफ़ था—तब उन्होंने उस शवस्थल (Grotes) को अगर (Aloe) और अन्य पुष्टिकारक औषधियों के धुवें से भर दिया। यद्यपि शव, शैवाल (Mose) के ऊपर, रक्खा हुआ था फिर भी वह कठोर और अचेतन था। उन्हों ने एक बड़ा पत्थर शवस्थल के द्वारपर रख दिया जिस से वाष्प से शवस्थल भर जावे और वाष्प बाहर न निकलने पावे। अन्यों के साथ जान यह कार्य्य कर के बेथोनिया को चला गया कि वह जाकर पुत्र शोक से पीड़ित उस की माता को सान्त्वना देवे ॥

यद्यपि वह रविवार था फिर भी कैयाफ़स (Caiaphas, ने अपने गुप्तचर भेजे। वह यह जानने का इच्छक था कि ईसा के गुप्त मित्र कौन २ थे। उस को सन्देह पिलेट पर था क्योंकि उसने बिना कुछ लिये ईसा का शव जोज़ेफ़ को दे दिया था, जो एक सम्पन्न, रब्बी और उच्च-राजसभा का सदस्य था और जो इस से पूर्व कभी अभियोग के समय उस में भाग लेने के लिये उपस्थित नहीं हुआ था परन्तु उसने अब अपना ही शवस्थल सूली दण्ड प्राप्त व्यक्ति के दफ़न करने के लिये देदिया था। अतः कैयाफस ने अनुमान किया कि सम्पन्न जोज़ेफ़ और जैलीली निवासियों के मध्य कोई गुप्त योजना है। और यह सुनकर कि उन्होंने शव को सुरक्षित रखने का प्रबन्ध किया है उसने उनके बन्दी करने

का विचार किया। क्योंकि उसे यह भय उत्पन्न होगया था कि जोज़ेफ़ और पिलेट मिलकर यहूदियों के विरुद्ध गुप्त सूत्रपात कर रहे हैं॥

इस भय से यह अत्यन्त चिन्ताग्रस्त हुआ और जोज़ेफ़ पर, येन केन प्रकारेण कुछ अभिशाप लगाने का विचार करने लगा जिस से उसे वन्दीगृह में डाल सकें॥

परन्तु उसने देरसे रात्रि में कुछेक अपने सशस्त्रभृत्यों को अन्धिकारमय घाटी में जो शवस्थल (Grotto) से जिस में ईसा का शव रक्खा था समीप ही थी, भेजकर स्वयं अपना भेद प्रकट कर दिया। उन से कुछ अन्तर पर मन्दिर के सैन्यदल का एक विभाग उच्च-पुजारी के भृत्यों की आवश्यक सहायतार्थ बैठा था। परन्तु जनप्रवाद ने तुम को बतलाया था कि यह विभाग रोमन सैन्यदल का है यह बात ठीक नहीं थी॥

उच्च-पुजारी ने पिलेट का भी विश्वास नहीं किया इसी बीच में निकोडेमस मेरे साथ संघ के भाइयों के पास आया, आने का उद्देश्य यह था कि सब से अधिक बुद्धिमान् ब्योज्येष्ठ की भी अनुमति प्राप्त करें कि ईसा को पुनर्जीवित करने का सर्वोच्च-उपाय क्या है। सब भाई इस बात से सहमत हुये और निश्चय किया कि प्रथम कुछ रक्षक रक्षार्थ शवस्थल पर भेज दिये जावें। और जोज़ेफ़ और निकोडेमस शीघ्रता से नगर को भावी उद्योगों की पूर्ति के लिये चले आये। अर्धरात्रि के बीत जाने और प्रातः काल होने से पूर्व पृथ्वी में फिर कम्प आने प्रारम्भ हुये और वायु अति पीडा-

कर होगया। चट्टानें हिलीं और फट गईं और छिद्रों से लाल रङ्ग की लपटें निकलने लगी जिस से प्रातःकाल के निकट जो लाल रङ्ग का कुहरा पड़ा करता है वह कुहरा प्रकाशमय होगया। निःसन्देह यह रात्रि भयानक थी। वनीय पशु भूकम्प से भयभीत होकर उच्च-स्वर से चीख़ते, चिल्लाते जिधर, तिधर भागने लगे। शवस्थल के सङ्कुचित द्वार से दीपक का कम्पपूर्ण प्रकाश भयानक रात्रि में इधर, उधर जाकर उच्च पुजारी के भृत्यों को भयभीत कर रहा था॥

वायु में होने वाले फुङ्कारों और पृथ्वी से होने वाली गर्ज और गम्भीर नादों से भी वे भयभीत होरहे थे। संघटन की आज्ञानुसार हमारा एक भाई शवस्थल में गया वह चौथी श्रेणी का श्वेत वस्त्र धारण कर रहा था वह एक गुप्तमार्ग से, जो पर्वत से शवस्थल तक है, और जिसे केवल हमारे संघटन के सदस्य ही जानते थे, गया। जब उच्च-पुजारी के कायर भृत्यों ने श्वेत वस्त्रधारी हमारे भाई को पहाड़ से धीरे २ उतरते और आते देखा, उस समय प्रातःकालीय रक्त कुहर से अन्धकार भी होरहा था, तो उन्होंने सोचा कि एक देवदूत* पर्वत से उतर रहा है॥

जब यह भाई शवस्थल पर आया- जिस का वह रक्षक नियत हुआ था उसने शवस्थल द्वार से आज्ञानुसार पत्थर निकाल लिया और उस पर बैठा रहा। ऐसा होने पर सिपाही भागे और इस बात को फैलाते गये कि एक देवदूत ने उन्हें वहां से निकाल दिया। जब वह युवक इसीर पत्थर

*यही देवदूत की कल्पित घटना इंजीलों मे भी अङ्कित है।

पर बैठा था तो फिर एक भूकम्प आया और वायु के एक झोंके ने शवस्थल में रक्खे दीपक को बुझा दिया अब वहां प्रातःकाल का प्रकाश होने लगा ॥

ईसा की कल्पित मृत्यु हुये अब ३० घन्टे बीत चुके हैं। जब भी किसी प्रकार की ध्वनि, रक्षकभाई शवस्थल में सुनता है तब शव के निकट जाकर देखता है कि कोई नवीन घटना तो नहीं हुई। उसे वायु से इस प्रकार की एक गंध आती प्रतीत हुई जो उस समय आया करती है जब पृथ्वी से अग्नि निकला करती है। रक्षक युवक को वर्णनातीत प्रसन्नता हुई जब उसने देखा कि ईसा के होंठ हिले और उसने श्वास ली। वह शीघ्र ही सहायतार्थ उस के पास चला गया और छाती से उठती हुई धीमी नाद उसने सुनी। मुखाकृति बदल गई और आखें खुल गईं। ईसा ने आश्चर्य के साथ हमारे संघटन के नव छात्र को ध्यान पूर्वक देखा। यह घटना उस समय हुई थी जब मैं प्रथम श्रेणी के भ्राताओं और जोज़ेफ़ के साथ संघटन को छोड़ रहा था। जोज़ेफ़ यह अनुमति लेने आया था कि किस प्रकार उस की ओर सहायता की जावे। निकोडेमस ने जो एक अनुभवी चिकित्सक था मार्ग में कहा था कि वायवी असामान्यावस्था जो तत्वों के परिवर्तन से होरही है, ईसा के लिये लाभदायक है और यह कि उसे ईसा के मर जाने पर कभी विश्वास नहीं हुआ था। और यह की नवाघात से रक्त जल प्रवाह आवश्यक चिह्न था कि उस का जीवन समाप्त नहीं हुआ है। इस प्रकार संलाप करते हुये हम सब शवस्थल पर पहुंचे। जोज़ेफ़ और निकोडेमस आगये थे। हम

सव संख्या में २४ और सब ही संघट्टन के प्रथम श्रेणी के सदस्य थे। शवस्थल में प्रवेश करते ही हमने देखा कि श्वेत वस्त्रधारी नवछात्र दोनों जानुओं से शैवाल के बिछौने पर बैठा हुआ अपनी छाती का सहारा पुनर्जीवित ईसा के शिर को देरहा था ईसा ने अपने "इसीर" मित्रों को पहिचान लिया उस की आखें हर्ष से फड़कने लगीं उस के गालों में हलकी उदास लाली आगई और वह यह कहता हुआ बैठ गया "मैं कहां हूं"॥

जोज़ेफ ने अपने बाहुओं के वीच में करके उसे अपने शरीर से लिपटा लिया और उस से वीता वृत्तान्त सब कह डाला कि किस प्रकार पूर्णतया मूर्छित होजाने से वह वास्तविक मृत्यु से बच गया, किस प्रकार उस मूर्छा को कैलवरी पर सिपाहियों ने मृत्यु समझ लिया था। ईसा को आश्चर्य्य हुआ—वह अपने ऊपर गिरपड़ा, ईश्वर की स्तुति की और जोज़ेफ की छाती के सहारे होकर रुदन करने लगा। तब निकोडेमस ने अपने मित्र से कहा कि कुछ उपाहार करलेवे अतः उसने कुछ खजूर और मधुमिश्रित रोटी खाई। और निकोडेमस ने कुछ मद्यपान भी कराया। अब ईसा बहुत कुछ विक्रान्त हुआ और स्वयं खड़ा भी होगया। तब उसे अपने हाथों और पुट्ठों के घावों का ज्ञान हुआ परन्तु सुगन्धित वस्तुओं के निकोडेमस द्वारा विलेपन का, घावपूरक प्रभाव होरहा था। अब पट्टियां खोल दीगईं और उस के शिर से मुकेण्डर Muckonder) प्रथक करदिया गया तब ईसा बोला और उसने कहा। "अधिक-काल-तक रहने योग्य यह स्थान नहीं है क्योंकि

शत्रुओं पर सुगमता से हमारा गुप्तभेद खुल जायगा और वे हम को बन्दी करलेंगे"। परन्तु ईसा स्वयं चल सकने के योग्य न था अतः वह एक गृह में, जो हमारे संघटन का था, पहुंचाया गया। यह स्थान कैलवैरी के निकट एक वाटिका में है और वह भी हमारे भाइयों ही की सम्पत्ति है॥

एक ओर हमारे संघटन का युवक भाई शीघ्रता से उस नवछात्र की सहायतार्थ, जो शवस्थल का रक्षक था, इस उद्योग से भेजा गया कि वहां से पट्टियों प्रयोगित औषधियों के बचे कुचे भाग को दूर करके उनका वहां चिह्न भी न छोड़े॥

जब ईसा हमारे भाइयों के स्थान पर पहुंचा तब वह निर्बल और उदास था। उस के आघातों में फिर पीड़ा होने लगी। वह द्रवीभूत् होगया था और जो कुछ बीता उसे उसने एक चमत्कार समझा। उसने कहा कि 'ईश्वर मुझे उठने की शक्ति दे जिस से जो शिक्षा मैं देरहा था उसे अपने में प्रमाणित कर दूं और मैं अपने शिष्यों को दिखला दूंगा कि मैं जीवित हूं॥

थोड़ा समय बीतने पर वे दोनों युवक जो शवस्थल को ठीक अवस्था में करने गये थे शीघ्रता से लौटे और यह समाचार लाये कि ईसा के मित्र शीघ्र उसे ढूंढने आवेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि जब वे शवस्थल को ठीक कररहे थे तब उन्होंने इस प्रकार का घोष सुना मानों बहुत से पुरुष वाटिका की चारदीवारी की ओर आरहे हैं॥

यह समाचार सुनकर वे दोनों युवक जब फिर शव-स्थल को गये तो वहां एक स्त्री आई जो जेरोसलीम से आरही थी और जब उसने देखा कि क़बर से पत्थर हटा हुआ है तो वह बहुत भयभीत हुई। उसने समझा कि शव के साथ कोई न कोई घटना घटित हुई है। वह शीघ्रता से "बेथबेहेम" को चली गई। कुछेक क्षण ही बीते होंगे कि जेरोसलीम से और स्त्रियां भी आईं और शवस्थल तक गईं। उन में से एक क़बर में घुसी कि शव को देखें परन्तु जहां शव रक्खा गया था वहां उसने हमारे भाई को नहीं देखा और यह बात उसने अपने साथियों को, भयभीत होकर और शव रक्षक की ओर कुछ संकेत करके बतलाई। और जब उन्होंने हमारे दूसरे भाई को भी देखा तो स्त्रियां उनके मुखड़ों को देखने लगीं और उन्होंने समझा कि वे देवदूतों को देख रही हैं। और उन भाइयों में से एक ने अपने व्योज्येष्ठ भ्राताओं की आज्ञानुसार, उन स्त्रियों से कहा कि "ईसा उठगया है" उसे यहां मत देखो। उसके शिष्यों से कहदो कि वे उसे जैलीली में पावेंगे"। दूसरे भाई ने कहा कि उस के शिष्यों को एकत्र करके जैलीली भेजदो। यह बात दूसरे भाई ने, जोज़ेफ़ की बुद्धिपूर्ण युक्ति से, कही थी। जोज़ेफ़ नहीं चाहता था कि ईसा की खोज जेरोसलीम में की जावे इसी में वह ईसा का क्षेम समझता था। रक्षकभाई शव-स्थल से बाहर पीछे के द्वार से गये और देखा कि एक स्त्री बिथेनिया की ओर शीघ्रता से जारही है। इस पर वे युवक भाई, शवस्थल में बीती घटनाओं की सूचना देने के लिये हमारे घर में आये॥

इसीर भ्राताओं ने ईसा से कहा कि वह इसी प्रकार अपनी रक्षार्थ गुप्त रहकर, अपने स्वास्थ को ठीक करे। परन्तु ईसा की उत्कट इच्छा यह हुई कि अपने मित्रों को सिद्ध कर देवे कि वह जीवित है। वह इस इच्छा से उत्तेजित हुआ और भीतर ही भीतर यह उत्तेजना बढ़ती और दृढ़ होती गई। उसने वस्त्र माँगे कि पहन कर अपने मित्रों के पास जावें। उसे वे वस्त्र पहना दिये गये जिन्हें इसीर भाई कार्य्य सम्पादन करते हुये पहनते हैं। इन वस्त्रों के पहन लेने से वह एक माली के सदृश दिखाई देने लगा॥

इसी बीच में वे दोनों युवक भाई फिर शवस्थल की ओर चले गये क्योंकि उन का कार्य वहां का अभी समाप्त नहीं हुआ था। वहां उन्होंने उसी स्त्री को देखा जो पहले ही शवस्थल की ओर आई थी इस बीच में जान और पीटर ने जो कुछ हुआ था उस की सूचना ईसा के शिष्यों को देदी॥

यह स्त्री हमारे भाइयों को शवस्थल को आते देख कर समझने लगी कि वे दोनों नवछात्र देवदूत थे जो रिक्त शवस्थल की रक्षा कररहे हैं और रोने लगी॥

उन छात्रों में से एक दयाशील छात्र ने, धीमे और शान्तिपद शब्दों में, उस स्त्री से रोनेका कारण पूछा? यह स्त्री मैरी थी जिस से ईसा प्रेम रखता था और हमारे संघटन के नियमानुसार उसे छोड़ने के लिये विवश होना पड़ा था। और ज्यों ही वह शोकित होकर सोच रही थी कि ईसा अब यहां नहीं हैं जहां रविवार से पूर्व रक्खा गया था, तो ईसा माली के भेष में उस के पीछे नहीं खड़ा था॥

इस इच्छा से उत्तेजित होकर कि उन्हें फिर देखे जिन से वह प्रेम रखता था और उन्हें सूचना दे देवे कि वह अभी जीवित है ईसा ने हमारे भाइयों के उस अनुशासन की अवज्ञा की कि वह अपने को अप्रकट रक्खे। और घर छोड़ कर वाटिका के मार्ग से उन चट्टानों की ओर गया जहां शवस्थल था। जब मैरी ने उसे देखा तो माली समझा परन्तु ईसा ने उसे पहचान लिया और उस के प्रेम से मुदित होकर उस से बोला, परन्तु निर्बल और पीड़ित अवस्था में होने से अब भी मैरी ने उसे नहीं पहिचाना—परन्तु ईसा ने उच्च स्वर से कहा "ओ मैरी!" तब उसने पहिचाना और उस के पांव चूमे और लिपटना चाहा परन्तु ईसा के हाथों और पुट्ठों में पीडा थी वह डरा नहीं इस के लिपटने से, उस के आघातों की पीडा बढ़ न जावे इस लिये जब मैरी लिपटने को आगे बढ़ी तब वह पीछे हट गया और कहा "मुझे छुओ नहीं यद्यपि मैं अभी जीवित हूं, तो भी शीघ्र ही मैं आकाश में अपने पिता के पास जाने वाला हूं। क्योंकि मेरा शरीर निर्बल होगया है और शीघ्र ही पञ्चतत्व को प्राप्त करेगा और मेरी पूर्ण मृत्यु होजाय गी"। ज्यों ही वह घुटनों तक झुकी और बड़े कौतूहल से टकटकी बांध कर उसे देखने लगी, ईसा ने कुछ एक आगन्तुओं के पदनिक्षेप का शब्द सुना और सुनते ही अपनी रक्षार्थ पीछे लौटकर एक वाटिका की दीवार के पीछे होगया। यह वाटिका हमारे मित्रों की वाटिका के समीप ही थी॥

दोनों युवकों ने, जो शवस्थल के रक्षक थे और जिन्हें समझा दिया गया था कि शत्रु के गुप्त चरों को, जो ईसा

के खोज में थे' लौटा देवें, यह सब कुछ देखा और सुना ॥

इसी बीच में जोज़ेफ़ और निकोडेमस और अन्यभाई भी गृह से वाटिका में ईसा की देख भाल करने आये वे यह भी देखना चाहते थे कि अत्यन्त निर्बल होने से कोई भय की घात तो नहीं है ॥

निकोडेमस ने जब उसे देखा तो वह सशङ्कित हुआ कि आघात पहले की अपेक्षा अधिक सूज गये थे और वह मांस जहां बलपूर्वक रस्सी बांधी गई थी अब काले रङ्ग का होगया था। जब हम वाटिका के द्वार पर पहुंचे थे तब ईसा को दीवार के पीछे खड़ा सहारा लेता हुआ देखा था, मानो वह अब आगे नहीं चलसक्ता ॥

यही समय था जब 'जान" नगर से आया था। उसने शवस्थल देखा और उसे शव रिक्त पाया। इधर दोनों युवक रक्षक वाटिका में होकर गुप्त द्वार से शव-स्थल पहुंचे :—

जान के पास पीटर भी आगया था और दोनोंने शव-स्थल को शव का पता लगाने के लिये, खोज की ॥

शवस्थलके अन्तरिक भागमें उन्होंने (Muckonder) देखा जो नवछात्रों ने वहाँ डाल दिया था ॥

जान और पीटर इन अपरिचित नव आगन्तुकों को आया देख कर वहाँ से भाग गये। और एकाग्रचित्त होकर बात करते हुये शीघ्रता से नगर को लौट गये ॥

इधर ईसा दीवार के सहारे धीमे २ चलता हुआ 'गीहोन' पहाड़ की घाटी के एक छोटे से द्वार पर पहुंचा जहाँ उसने दीवार से बाहर कुछेक स्त्रियों का संलाप सुना। जब वह उन के सम्मुख पहुंचा और उन्होंने इसे देखा तब उन्हें विश्वास होगया कि वह एक भूत को देखरही हैं—परन्तु ईसा ने, उन्हें यह विश्वास दिलाने के लिये कि वह भूत नहीं किन्तु असली आदमी है, उन से बातें कीं॥

जैसा कि शवस्थल में एक नवछात्र ने स्त्रियों से कहा था कि जैलीली में वे ईसा को देखेंगी, एक स्त्री को यह बात स्मरण होआई और उसने उस से कहा:—"स्वामी, क्या हम उस देवदूत की बात का विश्वास करें और तुझे फिर जैलीली में देखेंगे"?

इस प्रश्न से ईसा चकित हुआ क्योंकि उसे नहीं मालूम था कि भाइयों ने नवछात्रों को उस नगर की बात कहने को कह दिया था। परन्तु कुछ सोचकर उसने उत्तर दिया 'हां, मेरे मित्रों को सूचना देदो कि मैं जैलीली जाता हूं और वहां तुम मुझे देखोगी'॥

उस की निर्बलता बढ़ती जाती थी और उसने वहां अकेला ही जाना चाहा। वे स्त्रियां चली गईं। तब यह हुआ कि हम उस के गुप्त रक्षक उस के पास गये और उसे घर लौटा लाये कि अब विश्राम करे और गतश्रम होजावे॥

निकोडेमस ने उस की फिर मरहम पट्टी की और एक औषधपान दिया और शान्ति पूर्वक विश्राम करने का अनुशासन किया॥

परन्तु ईसा को मृत्युभय नहीं था। उसका उपलब्ध आत्मा था। तो भी शक्तिहीन होचुका था अतः गाढ़-निद्रा आगई ॥

तत्पश्चात् जोज़ेफ़, निकोडेमस और अन्य भाइयों ने मिलकर गम्भीरता के साथ विचार किया कि किस प्रकार उसकी रक्षा की जावे। और इसी उद्देश्य से उन्होंने कुछेक भाइयों को नगर में भेजा कि जाकर ज्ञात करें कि ईसा के लिये वहाँ जनप्रवाद क्या है। नगर के जनप्रवाद से, नगर में अनेक चमत्कारों की बात फैली हुई, जानी गई ॥

भागे हुये सिपाहियों ने अपनी कायरता छिपाने के लिये, घटित भयानक घटनाओं का विवर्ण फैलाते हुये, कहा कि रूहों के द्वारा क़बर फट गई ॥

उच्च-पुजारी को भी यह बातें बतलाई गईं वह सुनकर कर्तव्य विमूढ़ होगया। वह डरा, कि कदाचित् यह चमत्कार जनता को उत्तेजित न कर देवें। क्योंकि कुछ स्त्रियां और पुरुष भी उन से उत्तेजित होरहे थे और उसे गुप्त रहस्य समझने लगे थे। और सर्व साधारण में बराबर यही चर्चा बनी रहती थी। तब कैयाफ़स (उच्चपुजारी) ने कुछ धन सिपाहियों को दिया कि वे नगर में इस बात को फैलावें कि उस के मित्रों ने उस का शव छिपा लिया है जिस से उस के शिष्य कहने लगे कि वह ऊपर चढ़ गया है और इस प्रकार जनता को भ्रान्ति में डालें ॥

इधर दिनभर ईसा गहरी नींद में रहा जिस से उस का स्वास्थ्य बहुत सुधरा। सायङ्काल होने पर जगा। उस के

आघातों में अब पीड़ा कम थी सुगन्धित वस्तुओं के पुनः विलेपन से घावों की पूर्ति होने लगी। वह अच्छी अवस्था में था और कृतज्ञतापूर्ण दृष्टि से उसने देखा कि उस के मित्र उस की रक्षा कर रहे हैं। बिना सहारे वह अपने शयनागार से उठा। भूख लगी थी, भोजन किया और कहने लगा कि अब मैं फिर सबल होगया हूं। मुझे कर्तव्य यह प्रतीत होता है कि अब मैं अपने को गुप्त न रक्खूं क्योंकि एक शिक्षक को अपने शिष्यों में और पुत्र को माता की गोद ही में होना चाहिये। योज़ेफ़ ने उत्तर दिया कि "हमारा संघटन अपनी प्रतिज्ञानुसार अब तुम्हारी माता और पिता है और इस लिये संघटन का कर्तव्य है कि प्रिय बालकवत्. तुम्हारी रक्षा करे"। परन्तु ईसा ने उत्तर दिया कि 'मैं अब मृत्यु से नहीं डरता क्योंकि मैं उसे पूरी करचुका हूं। और शत्रु स्वीकार करेंगे कि ईश्वर ने मुझे बचाया है और उस की इच्छा नहीं है कि मैं सदा के लिये मरजाऊं'॥

प्रत्योत्तर में हमारे संघटन के एक वृद्ध ने कहा कि "तुम इस देश में सुरक्षित नहीं हो क्योंकि तुम्हारे शत्रु तुम्हारी खोज करेंगे अतः सर्वसाधारण में प्रचारार्थ मत जाओ क्योंकि जो कुछ तुमने शिक्षा दी है, वह तुम्हारे मित्रों में, सदैव रहेगी और तुम्हारे शिष्य उस को संसार में फैलावेंगे अतः मैं प्रार्थी हूं कि संसार के लिये तुम मरे हुये ही रहो। हमारे संघटन के द्वारा उस के सदस्यों के गुप्त उद्योगों से तुम पुनर्जीवित हुये हो इस लिये अब भविष्य में तुम हमारे संघटन के ही होकर रहो और ऐसा करने के लिये तुम बद्ध भी हो। संसार से अप्रकट रहते हुये कुशल और बुद्धि-

पूर्वक एकान्त वासी बनो। हम गुप्तरीति से तुम्हारे शिष्यों की सहायता करेंगे और तुम्हारी शिक्षा का प्रचार भी करेंगे। तुम्हारे शिष्य सदैव संघठन द्वारा सहायता और उत्साह प्राप्त करते रहेंगे। और यदि फिर ऐसा समय आजायगा जो तुम्हारे सर्वसाधारण में प्रकट होने के लिये अनुकूल होगा तो हम तुम को उस की सूचना देंगे और तुम्हें भेज देवेंगे"। परन्तु ईसा ने अपने आन्तरिक उत्साह से प्रेरित होकर कहा कि "ईश्वरीय शब्द जो मुझ में हैं मृत्यु के भय से अधिक बलवान् हैं, मैं एक बार फिर अपने शिष्यों को देखूंगा और जैलीली जाऊंगा"। प्रत्योत्तर में फिर उस वयोवृद्ध ने कहा "तुम्हारे लिये जो ईश्वरीय आज्ञा है वही हो। परन्तु यह मनुष्यों का औचित्य है कि अच्छे कामों में भी बुद्धि और सावधानता को न छोड़ें अतः कुछेक हमारे भाई तुम्हारे साथ जावेंगे और हमारे उन साधनों से जो जैलीली में हैं तुम्हारी रक्षा करेंगे"॥

निकोडेमस ने इस प्रस्तावित यात्रा को स्वीकार नहीं किया उस की सम्मति थी कि यद्यपि उस की आत्मा साहसी और बलवान है परन्तु उस का शरीर अत्यन्त जीर्ण होचुका है। अत एव विश्वास पात्र न्विकत्सक ने सविनय प्रार्थना की कि ईसा यह यात्रा न करे ऐसा न हो कि इस यात्रा से उस का रोग मुक्त होना असम्भव होजावे। परन्तु ईसा ने उत्तर दिया कि "जो होना है वह पूरा किया जावे"। जोज़ेफ़ ईसा के आत्मबल को देख कर मोहित होगया और उस की प्रतिज्ञाओं में उस को पहले से कहीं बढ़कर विश्वास हुआ, सायङ्काल होने पर ईसा चलने को हुआ और उसने अकेला

जाना ही इच्छानुकूल समझा। उस समय शीत बढ़रहा था भाइयों ने उसे एक गर्म चादर दी जिस से उसने अपना समस्त शरीर ढक लिया कि नगर के राजकर्म चारी उसे न पहचान सकें। उसे भ्राताओं ने परामर्श दिया कि इसीर मित्रों के साथ ही ठहरे और आतिथ्य ग्रहणार्थ राज मार्गों पर न चले। और उसे अनुशासन किया गया कि थिथेनिया और "इफ़रेमेटिकिल" पर्वत के मार्ग से जावे जहां से सेरिया की सीमायें उत्तर की ओर जैलीली से ऊपर हैं। ईसा अपनी यात्रा पूर्त्यर्थ चल दिया। भाइयों ने आशीर्वाद दिया कि मनोरथ सफल हो। जोज़ेफ़ ने अनुमति दी और तदनुकूल एक नवछात्र भेजा गया कि जो उस के पीछे २ चला जावे और मार्ग में गुप्तरीति से इसीर मित्रों को सूचित कर देवे॥

जो कुछ बीता उस की सूचना हमारे मित्र बराबर हमें देते रहे। जब ईसा "इमौल" के मार्ग पर था और कुछेक घन्टे ही चल चुका था कि उस का हृदय नव जीवन सम्बन्धी दिव्य ज्ञान से भर गया और उच्च-स्वर से बोल उठा जिस से हमारे दूत भी उसे सुन लेवें कि वह डैनियल (Daniel) सम्बन्धी भविष्यत वाणी कर रहा है दो और पुरुष भी उसी मार्ग पर ईसा की अपेक्षा अधिक वेग से चल रहे थे और वे शीघ्र ही ईसा के पास पहुंच गये। ईसा ने उन से कहा कि "शान्ति तुम्हारे साथ हो"। प्रारम्भ में उसने उन्हें इसीर मित्र समझा था परन्तु पीछे शीघ्र ही उन्हें पहचान लिया कि वे उसी के दो मित्र हैं और उन्हीं लोगों में से हैं जिन्होंने बहुधा उस का उपदेश सुना था॥

उन्हों ने उस शान्त यात्री की ओर कुछ भी ध्यान न दिया परन्तु ईसा ने उन्हें अपनी मृत्यु और अपने शिष्यों की गहरी निराशता की बातें करते सुना। और उन की बातों से ईसा ने समझा कि उसके मन्तव्य और उस की शिक्षायें, उस के मित्रों की निराशता से, भय है कि नाश हो जावें। क्योंकि उस के मित्र नेतृत्वहीन हो गये थे और कोई नहीं था जो उन्हें तितिर बितिर होने से बचावे॥

जब उन दो में से एक यात्री ने शोकपूर्ण होकर कहा कि यह भविष्यद्वाणी पूर्ण नहीं हुई जो ईसा के मृत्यु से जी उठने के सम्बन्ध में थी तो ईसा व्यग्रता से बोल उठा और वे दोनों यात्री (शिष्य) जो कुछ उन्हों ने ईसा से सुना उस से अतिमनोरञ्जित हुये क्योंकि उन्हें ध्यान आगया कि यही बातें पहले भी सुनी थीं अपनी यात्रा के उस स्थान पर जहां वे दोनों शिष्य ठहरे ईसा को भी रोक लिया जो अकेला ही रात्रि में जाना चाहता था और सामान्य प्रीतिभोज के समय उस ठहरे हुये स्थान में उन्होंने ईसा को पहिचान भी लिया। परन्तु ईसा ने इस स्थान पर अपना प्रकट करना उचित नहीं समझा और इस लिये वह अप्रकट रीति से द्वार से बाहर होकर इसीर मित्र के स्थान पर चला गया जहां उस के ठहरने का प्रस्ताव होचुका था। इस बीच में वे दोनों शिष्य जेरोसलीम को लौट गये इस उद्देश्य से कि ईसा के जी उठने का समाचार अपने मित्रों को देवें। यहां उन्हें पीटर मिला जिस के साथ जान भी था। इधर इसीर मित्रों में मिलकर सलाह की कि भावी कर्तव्य क्या होना चाहिये उन के साथ वह नवयुवक भी था जो हमारे संगठन की ओर से ईसा के पीछे २ गया था।

ईसा का विचार यह हुआ कि शीघ्रतर जेरोसलीम को लौटकर अपने मित्रों को पुनः प्रोत्साहित करे और उस समाचार को भी जिस के देने के लिये उस के दो शिष्य शीघ्रता से जेरोसलीम लौटगये हैं सत्यप्रमाणित कर देवे। तदनुसार फ़्लीर मित्रों ने एक टट्टू जानवर उसे दिया कि कि उस पर चढ़कर सुगमता से अपनी यात्रा पूर्ण करे। और नवछात्र जिसे इन्होंने भेजा था वह ईसा के साथ उस पशु के बराबर २ चलने लगा। इस प्रबन्ध से उन दो शिष्यों के पहुंचने के बाद शीघ्र ही ईसा भी उस प्रसिद्ध स्थान पर पहुंच गया जहां हमारे भाई मिला करते थे। ईसा ने संकेत किया जिस से द्वारपाल के हाथ से दण्ड पात हुआ और द्वार खुल गया क्योंकि उस समय उस के शिष्यवर्ग एक गुप्त सलाह कर रहे थे॥

जब ईसा ने सुना कि उस के अनुयायी उस के पुनर्जीवित होने की बात कह कर उस की सम्भावना पर विचार कर रहे थे वह उन के मध्य पहुंच गया—परन्तु प्रथम उन्हों ने उसे न पहचान कर सन्देह किया कि द्वार खुला रहगया था परन्तु वह उन से बोला, उन्हें सान्त्वना दी और सिद्ध किया कि वह वास्तव में अस्थि और मांसमय शरीरधारी ईसा ही है।

इस पर उन सबने हर्षोन्मत्त होकर उसे चारों ओर से घेर लिया उस के हाथों को छुआ। ईसा जान की छाती पर झुक गया क्योंकि मार्ग के श्रमान से उदासीन होरहा था। कुछ आराम करने पर और भी भलीभांति अपने मित्रों पर

अपनी सत्यता प्रमाणित कर देने के लिये, कि वह उसी प्रकार से है जैसे अन्य व्यक्ति, उसने भोजन मांगा। उस के मित्र भोजन कर चुके थे उन के भोजन से बचा हुआ कुछ भोजन था और वह शहद, रोटी और मछली थीं। ईसा ने उन्हें खालिया जिस से वह गतश्रम होगया॥

तत्पश्चात् उसने उन्हें उपदेश किया कि "वे उस काम को पूरा करें जिसे उसने प्रारम्भ किया था। धैर्य धारण करें परन्तु काम न छोड़े। उसने आशीर्वाद देते हुये कहा कि जहां मैं जारहा हूं उस स्थान को तुम पर प्रकट न करूंगा। और यह कि अकेला ही जाऊंगा—परन्तु जब तुम्हें मेरी आवश्यकता होगी तो मैं तुम्हारे पास आजाऊंगा। क्योंकि मुझे अभी तुम से बहुत कुछ कहना है। द्वार के बाहर नवछात्र प्रतीक्षा कर रहा था और उस जानवर को भी लिये हुये था। और जब ईसा बाहर आया तो उसने नवछात्र से कहा कि इसीरों के शान्त निवासस्थान को ले चलें। इसी बीच में एक और नव-युवक इसीर जेरोसलीम में भेद लेने को आगया था और अब वे दोनों ईसा को अपने बीच में करके ले चले क्योंकि वह अब भी निर्बल था और यात्रायास से उदासीन भी होगया था। कठिन परिश्रम कर अनेक कठिनाइयों को पार करते हुये वे रात्रि में उसे 'संघटन स्थान पर लाये और ब्योज्येउ के गृह पर लेगये जो जेरोसलीम से थोड़ीं दूर और ओलाइव पर्वत से मिला हुआ है॥

यहां उन्होंने ईसा को शेवाल (Moss) के एक अकठोर शय्या पर लिटाया उसे एक साथ गहरी नींद आगई।

और इसीर मित्रों ने शीघ्रता से जोज़ेफ़, निकोडेमस और अन्य इसीर मित्रों को घटित घटनाओं की सूचना देदी ॥

दिन निकलने से पूर्व ही एक सभा इस विचार के लिये की गई कि ईसा? जेरोसलोम को अपने आत्मिक-बल के आधार पर प्रकट रीति से लौट आया है जिस से अपने अनुयायिओं के काम को दृढ़ करें अतः उस की रक्षार्थ विशेष प्रयत्न करना चाहिये। एक स्वर से उन्होंने सम्मति कर के कहा कि अब समय नहीं खोना चाहिये। क्योंकि नगर में पुजारियों ने अपने गुप्तचर बहुसंख्या में नियत किये है जो यहां तक उद्योग कर रहे है कि उस के शिष्यों को भी फांसे। और निश्चय किया उसे यहां से तत्काल चला जाना चाहिये जिस से उसका यहां पता न लगने पावे। और वह शांत घाटी में जो जूथा और मैसेदा के दुर्ग से बहुत दूर नहीं है चला जावे जहां वन और पहाड़ी ग्राम हैं और जहां वह पहले चिकित्सक के साथ रह भी चुका है जिस के साथ ही वह हमारे पवित्र संघटन में प्रविष्ट हुआ था। इस लिये वह स्थान सुरक्षित समझा गया कि वहां कतिपय इसीए निवास करते थे। वे तो उधर सभा में उपयुक्त मन्त्रणा ही कर रहे थे कि इधर ईसा सुख की नींद से जाग उठा और यह देख कर आश्चर्य-पूर्ण होगया कि उस के चारों ओर उस के भाई बैठे हुये हैं। जोज़ेफ़ और निकोडेमस ने सविनय प्रार्थना की कि वह अपनी रक्षा करे और पुजारियों के अधिकार में पुनः अपने को न देवे। जोज़ेफ़ ने यहाँ तक कहा कि कैयाफ़स ने उस (जोज़ेफ़) को भी संदिग्ध ठहराया है। और यह कि उसने जैलीली निवासियों से मिलकर एक गुप्त-योजना की

है कि उपस्थित प्रस्थिति को परिवर्तित कर देवें। वह जोज़ेफ़ से भी इस बात का उत्तर लेगा कि उसने क्यों अपने शवस्थल में ईसा को रक्खा था। यहाँ तक कि वह पिलेट पर भी सन्देह करता है कि उसने जोज़ेफ़ से गुप्त रीति से मेल कर रक्खा है क्योंकि पिलेट ने 'कथित शव' बिना मूल्य के उसे दे दिया था। इन सब बातों को प्रकट करते हुये जोज़ेफ़ ने ईसा से सानुराग प्रार्थना की और चाहा कि उस की इच्छानुसार कार्य्य करे। संघटन के प्रायः सभी वृद्धों ने भी जोज़ेफ़ के कथन का समर्थन किया। ईसा ने उत्तर दिया :—

"एवमस्तु, परन्तु मैं बलपूर्वक विनय करता हूं कि मेरे शिष्यों को उत्साहित करें, सहायता देवें उन की रक्षा करें और उन से कहें कि वे इस में किञ्चिन्मात्र सन्देह न करें कि मैं अब भी शरीर और आत्मा दोनों के साथ उन के साथ ही हूं" ॥

जोज़ेफ़ ने प्रार्थना की कि अभी और आराम करे क्यों कि निकोडेमस ने भय प्रकट किया है कि ईसा का विस्तोद्वेग और उत्साह उस के स्वास्थ्य के लिये अनुकूल न होगा और उस के मृतवत शरीर को लाभ न पहुंचावेगा। क्योंकि यद्यपि उस के हाथ के घाव भर रहे हैं और पुट्ठे के आघात से भी मवाद नहीं निकलता तब भी उस का शरीर निर्बल है ॥

और मस्तिष्क के उद्वेग से सुगमतया प्रभावित हो जाता है—परन्तु सोकर ईसा ने सम्प्रति अपने को गतश्रम बनालिया। और पुनः अधिक विचार कर के बोला कि "यदि मेरे शिष्य मेरे वास्तविक जीवित होने से सन्तुष्ट नहीं

हैं और यदि मैं फिर उन में न जाऊंगा तो वे अपनी मति का भ्रम जानते हुये मुझे एक भूत समझेंगे"। जोज़ेफ़ ने उत्तर में कहा "अच्छा जान को संघटन की उच्च श्रेणी में होजाने दो तब वह तुम्हारे जीवित होने से सन्तुष्ट होसकता है और तुम्हारी आज्ञाओं का पालन कर सकता है और तुम्हारे सम्बन्ध की सब बातें अन्य शिष्यों तक पहुंचा सकता है"।

परन्तु हमारे संघटन के वृद्ध भाई जान को समस्त गुप्त भेदों में सम्मिलित कर लेने से सहमत नहीं हुये क्योंकि वह अभी सब से नीचे की श्रेणी में था और उन्हें भय हुआ कि कहीं वह उत्कट उत्साह वशात् अन्यों को सूचना न दे देवे कि ईसा यहां है। तो सब के लिये भय उपस्थित होजावे। इधर यह अभी मन्त्रणा ही कर रहे थे कि इसी बीच में हमारे संघटन का एक नव-छात्र आया और उसने सूचना दी कि जान अपने मित्रों के साथ शीघ्रता के साथ बिथेनिया गया है कि लाज़रस के घर जाकर उस स्त्री को सान्त्वना देवे कि ईसा अभी जीवित है और यह की उसने उस की छाती का सहारा लेकर आराम किया है। और जान ने आश्चर्य किया कि ईसा ने जिस प्रकार उस स्त्री को जैलीली जाने का परामर्श दिया ऐसा परामर्श उसे क्यों नहीं दिया। इस लिये उसने समझा कि उस के स्वामी का ऐसा सङ्कल्प नहीं था और शिष्यों को भावी घटनाओं की प्रतीक्षा करनी चाहिये॥

ईसा दिनभर इसीर मित्रों के साथ रहा जब रात्रि हुई तब हम सब गुप्त मार्ग से चल दिये और "रिफ़ेम" की घाटी होते हुये दिन निकलते समय मैसीडा पहुंच गये और

एक सङ्कुचित मार्ग से होकर, जिस का ज्ञान केवल इसीरों को था, हम सब अन्तमें उस वनीयपर्वतघाटी के भाइयों के पास पहुंच गये। यहां ज्योज्येष्ठ भाई ने ईसा के निवास-आदि का सब ठीक प्रबन्ध कर दिया। और जब जोज़ेफ़ और हम सब वहां से चलने को हुये तो ईसा ने हमें वचन दिया कि अब वह उस समय तक वहीं रहेगा जब तक कि पिता अपने प्रेरण (Mission) के पूर्त्यर्थ उसे न बुलावेगा। प्रत्येक दिवस वहां के भाई एक सेवक ईसा का स्वास्थ्य, समाचार देने के लिये हमारे पास भेजा करते थे और हम को सूचना मिली कि ईसा ने लगातार कई दिन तक विश्राम किया परन्तु उस का हृदय उदास और उद्वेग पूर्ण विचारों से गहरा प्रभावित रहता था॥

यह वही घाटी थी जहां वह अपने प्रिय साथी जान के साथ घूमता रहता था और जिस के साथ हमारे संघटन द्वारा दीक्षित हुआ था। ईसा ने चित्त एकाग्रता के साथ विचार किया कि जान जिस ने एक चिकित्सक की स्थिति में एक पाठशाला खोली थी और जिस ने बपतिस्मा दिया था शत्रुओं द्वारा वध हुआ परन्तु वह (ईसा) ईश्वर की रक्षाओं द्वारा बच गया। उस के विचार में यह बात भी आई की ईश्वरीय आज्ञा यह है कि उसे विश्राम नहीं लेना चाहिये और यह कि उस का शरीर उसे फिर किसी उद्देश्य से मिला है। इस विचार के आने से उस का चित्त कुपित और अतिपरिप्लुत हुआ, और ज्यों ही कि वह उस स्थान पर आया जहां जान के साथ उसने प्रतिज्ञा की थी कि वह सुकृत्य और सत्यता के लिये प्राण तक दे देंगे, वहां उसे यह अनुभव हुआ

कि मानों उसे कहा गया है कि वह उस उद्देश्य की पूर्ति करे जिस के लिये उस का मित्र मर चुका है ॥

ईसा प्रतिदिन उस पुण्य भूमि में जाने लगा और प्राकृतिकशोभा देख कर अपने शरीर को नवोत्साह सञ्चरित करने लगा। उसने एक स्थान निर्वाचित किया जहाँ से वह पश्चिम की ओर मैसोडा की उच्च इमारतें देख सका था और जहां उच्चपर्वत शिखरों के कारण प्रातःकाल से दोपहर तक छाया रहती थी। जिस के दूसरे ओर समुद्र और सोडिम घाटी तक बिना किसी रुकावट के खुली हुई भूमि दिखाई देती थी। परन्तु संघटन के वृद्ध महाशय ने उसे अकेला कभी नहीं छोड़ा; जहां तक उसे ज्ञात होसका यह यह था कि ईसा बहुधा ध्यानावस्थित होकर लेटा रहता था उस की इस इच्छा से कि वह अपने शिष्यों में रहे उस के रक्षा के समस्त साधन निरर्थक होजावेंगे। लगभग इसी समय जेरोसलीम में हमारे संघटन के भाइयों ने अपनी प्रतिज्ञा का स्मरण किया जो उन्होंने ईसा से उस की रक्षा और उन में उस के गुरू के पुनर्जीवित होजाने के विचारों के दृढ़ करने के लिये की थी। इन्होंने उस का उद्योग भी किया—परन्तु ईसा के समस्त शिष्यों ने अपने गुरू के पुनर्जीवित होने पर विश्वास नहीं किया। सन्देह करने वालों में एक "थौमस" था जो गहरे विचार का व्यक्ति था और जिसकी शिक्षा इसोर भ्राताओं के द्वारा हुई थी और इसी हेतु से उसे प्राकृतिक अप्रकट शक्तियों और कार्य्य प्रणाली का ज्ञान था। प्राकृतिक नियमानुसार उसने सब बीती घटनाओं की व्याख्या की और उसे विश्वास था

कि इन में कोई चमत्कार अथवा अलौकिकता नहीं थी क्योंकि इसीर होने के कारण उस में मूढ़ विश्वास नहीं था। ईसा ने उसे योग्य समझ कर और उस पर विश्वास करके अपने उद्देश्य और कार्यों की व्याख्या उस से की थी और थोमस ने अत्यावश्यक समझते हुये उन बातों पर विश्वास किया था। ईसा यह जानता था कि थोमस स्पष्ट वक्ता और महा-बुद्धिमान् है। मिथ्योद्देश और मनोविकार का उस में चिह्न भी नहीं। और धैर्य और दीर्घ-प्रयत्न के साथ, इसी लिये उसने अपने उद्देश्य उस के सम्मुख रक्खे तभी वह सन्तुष्ट भी हुआ था। और जब एक बार ईसा के समस्त शिष्य अपने मन्त्रणा के गुप्तस्थान में एकत्र थे और थोमस भी उन में था तब उसने इस बात में विश्वास न करते हुये कि मृतपुरुष क़बर से उठकर पुनर्जीवित होसक्ता है, इस के विरुद्ध तर्क उपस्थित किये परन्तु जान ने स्वयं ईसा को देखा था और अच्छी भांति जान लिया था कि वह ईसा ही था और ईसा को उसने अपनी छाती के सहारे रक्खा भी था। तब भी थोमस सन्तुष्ट नहीं हुआ यद्यपि उसे देवदूतों की भविष्यद्वाणियों में विश्वास था और समझता था कि वे अवश्य पूरी होंगी। प्यारे भाइयों, इलियास ने आयोपित किया था कि यहूदी "मसीयाओं"* (Messias) को, वे जिस ढङ्ग से आते हैं, देखने की आशा रखते हैं।

---

* "मसीया" (Messia) का शब्दार्थ मुक्ति (निजात) दिलाने वाले के हैं परन्तु ईसाई साहित्य में पीछे से यह शब्द ईसा के नाम की भांति प्रयुक्त होने लगा।

इधर हमारे संघटन ने ईसा से सब समाचार भेजते रहने की प्रतिज्ञा की थी विशेष कर ऐसी अवस्था में कि समस्त शिष्य वर्ग परस्पर सहमत नहीं है जिस से भय था कि उन का उत्साह अच्छे काम की ओर से कम होजायगा, अतः हमने दो युवकों को मैसीडा की घाटी में भेजा कि वहां के भाई ईसा से मिलकर सलाह करें ॥

जब ईसा ने यह सब बातें सुनीं तो उस के मन में प्रबल इच्छा उत्पन्न हुई कि एकान्तवास छोड़ कर एकबार फिर अपने शिष्यों को दर्शन देवे। हमारे दूतों ने यहां यह भी कहा था कि थोमस को ईसा के पुनर्जीवित होने पर विश्वास नहीं और हो भी नहीं सक्ता जब तक वह उस के हाथों और पुट्ठे के आघातों को स्वयं न देख लेवे, यह सुनकर ईसा अपनी इच्छा का निरोध नहीं कर सका और वहां के वृद्धने भी सम्मति दी कि वहां जाकर उन्हें सन्तुष्ट कर देवे ॥

यह घटना सातवें दिन की, उस समय से, थी जब से ईसा ने अपने को अप्रकट रीति से रक्खा था ॥

तत्पश्चात् हमारे भाई ईसा के साथ जेरोसलीम गये और आठवें दिन जब शिष्य वर्ग वहां एकत्रित थे, ईसा उन में गया और तब थोमस को विश्वास हुआ ॥

इस कार्य्य को समाप्त करके ईसा अपने शिष्यों को सम्बोधित करके बोला और उन्हें समझाया कि उस की वहां उपस्थिति से वे भी सुरक्षित न होंगे। अतः उसने सोत्साह उन से याचना की कि उस में विश्वास रक्खें और सब सहमत रहें—परन्तु अभी वह यह नहीं कह सका कि

वह जेलीली में उन से कब और कहां मिलेगा और यह कि इस को विस्तार वह निश्चय करेगा। इस के बाद सायङ्काल के समय वह वहां से चला, जान उस के साथ था। घर से बाहर एक युवक इसीर था जिसने ईसा से कुछ सेवाकार्य्य की याचना की और ईसा ने उसे यह सूचना देने के लिये भेजदिया कि वह बेथेनिया में है॥

तत्पश्चात् ईसा ने अपने साथी जान के साथ किड्रोन (Kidron) को पार किया। रात्रि स्वच्छ और सुहावनी थी और चन्द्रमा का फीकासा प्रकाश भी मार्ग पर पड़रहा था। गैथसेमेन (Gathseman") में ईसा ने दीवार के सहारे कुछ विश्राम किया और जान से आत्मबलिदान और अपने भोगे हुये कष्टों का बखान किया॥

अपने शिष्यों से सूचना पाकर उसने जान को बेथेनिया में पहले ही लाज़रस के घर भेज दिया कि वहां पहुंच कर उस के आने की सूचना देते हुये यह भी देख लेवें कि वह स्थान उस के लिये सुरक्षित है॥

तब शीघ्रता से ईसा घर में अपनी माता और मित्रों से मिलने गया सब ने मिल कर, ईश्वर को धन्यवाद देते हुये कि उस ही की कृपा से परस्पर एकबार और भी मिलने का अवसर मिला, भोजन किया और गत-श्रम हुआ। दूसरे दिन ईसा उन्हीं के साथ रहा और उन सब को शान्ति देते और उत्साहित करते हुये कि सत्यता में विश्वास रक्खें, उन से बोला कि अपनी इस दुराशा को छोड़ देवें कि वह सदैव उन के साथ रहेगा। रात्रि होगई थी अतः ईसा ने उन सब

से कहा कि यही उचित समय जाने का है। अब यह शीघ्रता से जैलीली जावेगा वहां जाकर, अपने शिष्यों में दृढता उत्पन्न करते हुये, उन्हें समझा जावेगा कि अच्छे कार्यों में सदैव प्रवृत्त रहें। अभी ईसा बेथेनिया ही में था कि उसे भय उपस्थित होते हुये प्रतीत हुये। कैयाफ़स (उच्चपुजारी) को सूचना मिली थी कि ईसा जेरोसलोम में देखा गया है और इस लिये उसने जन प्रवाद फैलाया कि उस के शिष्यों ने ईसा का शव चुरा लिया और उस के सम्बन्ध में एक अलौकिक घटनापूर्ण कहानी गढ़ली—परन्तु नगर निवासियों में अनेक पुरुष थे जिन्हें सचमुच यह विश्वास था कि ईसा ईश्वरीय शक्ति से पुनर्जीवित हुआ था। ऐसे पुरुषों ने सशोक कहना प्रारम्भ किया कि ईसा के साथ अन्याय किया गया और वे लोग उसके मन्तव्यों पर विश्वास करने लगे॥

इस पर उच्चपुजारी को भय उत्पन्न हुआ कि जनता में परिवर्तनार्थ उत्तेजना प्रसरित हो रही है। उसे यह भी विश्वास होगया कि जैलीली निवासी प्रचलित राज्य का परिवर्तन करके एक नये शासक की नियुक्ति की चेष्टा कर रहे हैं। इस लिये वह संदिग्ध हृदय और सावधान था। सायंकाल के समय निकोडेमस हमारे संघटन में आया और यह समाचार लाया कि "अरिमेथिया" निवासी जोज़ेफ़ बन्दी कर लिया गया है उस पर अभियोग यह प्रकट किया गया है कि वह कृतापराध और ईसा का गुप्त सहचर है। इस समाचार के सुनने से हमारे संघटन में बड़ी चिन्ता उत्पन्न हुई और भय हुआ कि कहीं ईसा भी तो नहीं पकड़ लिया गया है क्योंकि उसे सायंकाल से, जब उसने थोमस को

सन्तुष्ट किया था, हम में से किसी ने नहीं देखा था। विचार स्थिर करने के लिये हमारे संघटन के वृद्धों की एक सभा हुई जिस में यह निश्चय हुआ कि ईसा की खोज और जोज़ेफ़ के छुड़ाने का भरसक यत्न करना चाहिये। तदनुसार हमारे दो भाई नियुक्त हुये कि पवित्र छुट्टी के दिन का श्वेत वस्त्र धारण कर बिथेनिया में ईसा की खोज करें क्योंकि युवक इसीर को उसने वहीं जाने की सूचना दी थी। ज्योंही वे बिथेनिया सायङ्काल के समय पहुँच कर लाज़रस के घर पहुंचे, जो वहां निकट ही था, उस समय चन्द्रमा का प्रकाश भी फैला हुआ था, तो गुप्त मार्ग पर उन्हें एक पुरुष मिला जो मार्ग को अच्छा भांति देखता जा रहा था परन्तु इसीरों ने उसे पहचान लिया और उस से पूछा कि क्या ईसा उस के घर है? यह व्यक्ति लाज़रस था। उसने भी हमारे भाइयों को पहचान लिया और उत्तर दिया कि अभी वह घर ही है परन्तु इसी रात वह बिथेनिया से जानेवाला है अतः वह मार्ग देखने आया हूँ कि सुरक्षित हैं। वे भाई घर पहुंचाये गये जहां एक प्रथक और एकान्त स्थान में उन्होंने ईसा से बात चीत की। और उन्होंने जोज़ेफ़ के बन्दी होने का समाचार ईसा को सुनाया तो, उसने संघटन द्वारा उस की रक्षा के लिये प्रार्थना की॥

ईश्वर प्रार्थना पश्चात् ईसा ने जान को जेरोसलीम भेजा; कि वह शिष्यों को भय से सूचित कर देवे॥

तब उस स्त्री से आज्ञा प्राप्त करके हम सब लाज़रस को लेकर "गिलगेड" (Gilgad) चल दिये वहां से ईसा

रात्रि ही में अकेला चल दिया और प्रातःकाल ही वह जार्डन नदी के किनारे उस स्थान पर पहुंचा जहां जान ने उसे बिप्तिस्मा दिया था ॥

जेरोसलीम के हमारे संघजनस्थभ्राता जोज़ेफ़ को मुक्त कराने के उपायों को सोच रहे थे। इस मुक्ति के लिये उपयोगी अनेक गुप्त-साधन हमें प्राप्त थे। उधर जान ने अपने मित्रों और शिष्यों को, आज्ञानुसार, सावधान किया ॥

दूसरे दिन प्रातःकाल शिष्य-वर्ग बहुसंख्या में जैलीली की सीमा पर पहुंच गये। वहां पहुंचने पर एक दूसरे से पूछने लगे "कहां हम जावेंगे? हमारे गुरू ने कोई समय अथवा स्थान नियत नहीं किया है।"

वे अपने घरों का स्मरण करने लगे जहां से इतनी दूर आचुके थे। वे यह सोच ही रहे थे कि 'नैज़रिथ में ईसा को खोज करें अथवा "कैपरन्नेम में" कि पीटरने कहा कि "हमें आहार का प्रबन्ध करना चाहिये निश्चेष्ठ नहीं होना चाहिये; उस समय तक हम कार्य्य करें जब तक कि हमारा गुरू हम को उच्चकार्य्य के लिये न बतलावे" ॥

पीटर का परामर्श सुन कर उन्होंने पहले कार्य्यों का पुनः प्रारम्भ करना निश्चय किया। और पीटर 'बेथसेडा" चला गया जहां थोड़े ही दिनों में कुछ और पुरुष भी आगये कि उस के साथ रह कर उस की सहायता करें। पीटर एक मत्स्यमात्स्यिक (Fisherman). था उसने अन्यों को भी निमन्त्रित किया कि सायङ्काल उस के साथ समुद्र चलें ॥

ईसा प्रतिदिन थोड़ी २ दूर चलता रहा और मार्ग में इसीर मित्रों के साथ ठहरता गया जो घाटियों में रहते थे। और थे सब भाई जेरोसलीम के संघटन द्वारा सूचना पाते रहे थे उन सब घटनाओं से जो हमारे साथ घटित हुईं पूर्णतया अभिज्ञ थे और इन्हीं से ईसा को ज्ञात हुआ कि जाज़ेफ़ बन्दीगृह से मुक्त हो गया। और उस से मिलने आरहा है॥

जब ईसा ने जैलीली जाना प्रकट किया कि वहां वह उन स्थानों पर जाना चाहता है जिन का उन्हें पूर्व परिचय है तो इसीर मित्रों ने इस का विरोध किया और उन भय और शङ्काओं से जो उस के चारों ओर थीं उसे सचेत किया। ईसा ने उन शङ्काओं पर ध्यान देते हुये किसी अन्य स्थान के लिये जाना विचार किया जहां वह अपने शिष्यों से मिल सके। निदान एकान्त स्थान में एक सुरक्षित जगह निश्चय करली गई, जहां उसे कोई नहीं जानता था और जहां आवश्यक्ता होने पर उस के शिष्यों के रहने के लिये भी काफी स्थान था—परन्तु जेरोसलीम के संघटन के वयोज्येष्ठ भ्राता ने इसीरों को अनुमति दी थी कि "कैरमेल" पहाड़ की एकान्त घाटी, मिलने का स्थान नियत किया जावे, क्यों कि वह स्थान सुन्दर और रम्य है और वहां कुछेक इसीर भी रहते हैं॥

घाटियों में उत्पन्न बहुपुष्टकारक औषधियों की सुगन्धि, जो उन से निकलती रहती है, यात्रियों के लिये स्वास्थ-प्रद है। इसी स्थान से हमारे संघटन में औषधियां जाती हैं

और हमारे चिकित्सों द्वारा प्रयोगित होती हैं। वहां स्वच्छ पानी के झरने चट्टानों सेप्रवाहित हैं। इन चट्टानों में अनेक गुफ़ायें हैं जिन में वे पुरुष रहा करते हैं जो एकान्त वास ग्रहण करना उपयोगी समझते हैं॥

जब इसीर भ्राताओं ने इस स्थान पर जाने की अनुमति ईसा को दीं तो ईसा को भी स्मृति हुई कि प्राचीन देव-दूत "इलियास" और 'इलीशा" के लिये भी यही स्थान वतलाया गया था और वे भी इसी स्थान पर रहे थे अतः ईसा ने भी वहीं जाना निश्चय कर लिया क्योंकि वहां वह अपने शिष्यों को, शत्रुओं की पहुंच के भय से मुक्त होकर, शिक्षा दे सकेगा इस लिये भी यह स्थान उपयोगी समझा गया कि वहां ही कुछ सदस्य, हमारे भाई रहते थे—परन्तु ईसा ने इच्छा की कि अब भाइयों में से कोई उस के साथ न जावे और तदनुकूल वह एकाकी "वेथसेडा" के मार्ग पर चल कर वहां पहुंच गया और अपने एक शिष्य सीमन (Simon) के यहां ठहरा। दिन निकलते ही जैलीली के समुद्र के तट पर पहुंच गया वहां उसे एक झोपड़ी मिली जो पीटर ने अपना व्यापार करते हुये विश्राम के लिये बनवाई थी।

वहां उसे पीटर और जान मिले जो मत्स्य ग्रहण कर रहे थे। यहां प्रीतभोज में भाग लेकर ईसा गत-श्रम हुआ। यहां उसे यह भी ज्ञात हुआ कि उस के समस्त शिष्य-वर्ग एकत्रित होकर वेथसेडा आने के लिये सहमत थे कि वहां पहुंच कर कर्तव्य निश्चय करें—परन्तु ईसा ने उन्हें कार-मेल पर्वत पर बुलाया जहां जाने की प्रतिज्ञा उसने इसीर

मित्रों से की थी। और ईसा ने दूसरे दिन सायङ्काल के समय निर्दिष्ट स्थान पर पहुंचने के लिये फिर यात्रा प्रारम्भ की। कारमेल पहाड़ की तली में कुछ दिन विश्राम लेने से ईसा फिर शिक्षाकार्य्य करने के योग्य हो गया। यहां उस के शिष्य आये और अपने साथ बहुत से अन्य अनुयायियों को भी लाये क्योंकि यहां उस एकान्त घाटी में वे सब सुरक्षित थे और ईसा के पुनर्जीवित वृत्तान्त प्रकट होजाने से जैलीली में बहुत उत्तेजना फैल रही थी। उन में से अनेक पुरुष तो केवल एक नई और आश्चर्य्यमय घटना समझ कर ईसा को देखने मात्र के लिये आये थे जिस से वे समझने लगे थे कि अनोखे काम करता है और चमत्कार दिखलाता है। शेष आगन्तुक, ईसा के आनेवाले राज्य और रोमनों के हाथों से यहूदियों के उद्धार पाने की आशा करके, आये थे। ईसा को, अपने उद्देश्य का उपयुक्त भांति अर्थ लगाने से, हार्दिक दुख हुआ क्योंकि बहुधा वे इन बातों के सम्बन्ध में उपदेश हो चुका था अब भी उसने अपने शिष्यों को बतलाया कि उस का यह उपदेश कभी नहीं था कि ईश्वर का पुत्र, सांसारिक शक्तियों और विभूतियों के वस्त्रों से आच्छादित होगा—परन्तु इसर भ्राता, ईसा के उद्देश्य की वास्तविकता से, अभिज्ञ थे और उन्होंने उपयुक्त भांति में भाग नहीं लिया था। क्योंकि वे भली भांति परिचित थे कि संघटन के नियमानुसार, जिन के पालन करने के लिये ईसा दीक्षित हुआ था, हमारे भाई राज सम्बन्धी कार्यों में कोई भाग नहीं ले सकते और न सांसारिक शक्तियों के प्रभाव से प्रभावित हो सकते हैं॥

आगन्तुक ईसा के दर्शनों के उत्कट इच्छुक थे अतः सब को शिष्यों द्वारा सूचना मिली कि सभा प्रातःकाल होते ही होगी ॥

ईसा पहाड़ की चोटी से उतरा जहां कोहरा पड़ा था और सूर्य्य की किरणों के पड़ने से लाल रङ्ग का हो गया था और ईसा इसीरों की भांति श्वेत वस्त्र धारण कररहा था दर्शकों ने उसे एक अलौकिक पुरुष समझा और उस के सम्मुख सब भूमि पर, प्रणाम करने के उद्देश्य से, गिर पड़े। और कतिपय पुरुष भयभीत होकर उस के मार्ग से हट गये ईसा उच्च-स्वर से बोला कि वह कोई पाठशाला स्थापित करने के लिये नहीं किन्तु भूमि पर ईश्वर के राज्य की स्थापना करने के लिये आया है। बुद्धि और सुकृत्य उस के साधन हैं। उसने बितिस्मे की प्रथा प्रचलित की, और अपने शिष्यों को उसने वह शिक्षायें दीं जो उसने अपने संघटन के वृद्धों से प्राप्त की थीं। अर्थात् रोगियों का अच्छा करना, खनिजपदार्थों के गुणों का निश्चय करना, वनस्पतियों का औषधरूप में प्रयोग करना, वनीय पशुओं को हिंसा रहित बनाना, विषके घातक प्रभाव को दूर करना इत्यादि इत्यादि और शिष्य और दर्शकगण जो उन के साथ आये थे कई दिन तक घाटी में ठहरे रहे। ईसा ने उन्हें यह भी शिक्षा दी कि किस प्रकार उन्हें रहना चाहिये और और किस प्रकार उस के मन्तव्यों को उस के नाम से प्रचार करना चाहिये ॥

इसी बीच में जेरोसलीम के संघटन के वृद्धों ने यहां के इसीर भाइयों को सूचना दी कि पुजारियों के गुप्तचरों

और उच्च-सभा (Grand Council) को जैलीली में फैले हुये उत्तेजनापूर्ण विचारों तथा इस बात को भी सूचना मिल गई है कि अनेक पुरुष कारशल पर्वत की घाटी में गये हैं। अतः भाइयों ने ईसा को इस भय की सूचना दी कि अपने शत्रुओं से बचे और बचे रहते हुये ही अपने उद्देश्य की पूर्ति करे। क्योंकि उन्हें गुप्त सूचना दी गई थी कि कैयाफ़स ने निश्चय किया है कि चुपचाप ईसा को वन्दी करके उस का वध कर देवे क्योंकि उसने विश्वास किया हुआ है कि ईसा के रूप में कोई वञ्चक पुरुष है॥

इस पर ईसा ने अपने श्रोताओं को लौटा दिया और उन से कह दिया कि यदि वे उस से बातें करना चाहें तो उन्हें यहां से बेथःबारा जाना चाहिये जहां वह उन की प्रतीक्षा करेगा। आगन्तुकों के साथ वहुत कुछ कहने और समझाने बुझाने की बात करने से वह थका मांदा हो गया और इस लिये उसे विश्राम अपेक्षित था। वह समय आगया जब इसीरों को प्रीतभोज में सम्मिलित होना चाहिये इस लिये घाटी में स्थित सभी भाई उस स्थान में एकत्रित हुये जहां ईसा रहता था। अरिमेथिया निवासी जोज़ेफ़, निकोडेमस और जेरोसलीम के संघटन के अन्य हम सब वृद्धभाई, उस के साथ प्रस्तावित हुये—परन्तु ईसा सहे हुये कष्टों के कारण अब भी कुछ तो निर्वल था ही और कुछ और उत्तेजित उसे उस हर्षाधिक्य ने कर दिया जो एक बार फिर अपने प्रिय मित्रों जोज़ेफ़ और निकोडेमस के देखने से हुई थी। और वह अपनी मृत्यु के सम्बन्ध में वहुत कुछ कहता रहा॥

"यदि मैंने संघटन के समस्त नियमों का पालन नहीं किया है तो मुझे मिथ्या मत समझना। क्योंकि मैं यदि उसी प्रकार से गुप्त काम करता जैसा तुम करते हो तो सचाई जनसमूह पर प्रकट न होती" ॥

"बुद्धि का सदभ्यास और निर्वाचित सुकृत्य खुले तौर से प्रकट किये जासकते हैं" ॥

यह कह कर ईसा ने भाइयों से सोत्सुक याचना की कि "गुप्तता को प्रथक करके आगे बढ़कर सर्वसाधारण से मिलो और उस के शिष्यों से मिलकर शिक्षा का विस्तार करें"। ये शब्द जो उसने कहे हमारे भाइयों में से अनेकों के हृदय में जड़ पकड़ गये। परिणाम यह हुआ कि मैं अब उन में से कईओं को देख रहा हूं कि उन्होंने अपनी एकान्ता छोड़ दी और वे अब ईसा के साक्षी बन रहे हैं ॥

जोज़ेफ़ ने ईसा से कहा "कि तुम पर विदित हो कि जनसमूह, जो तुम्हारे मन्तव्य को कुछ भी नहीं समझते, तुम को सांसारिक राजा रोमन राज्य के नष्टभ्रष्ट करने के लिये, बतलाने का सङ्कल्प कर रहे हैं—परन्तु तुम को ईश्वर का राज्य, युद्ध और क्रान्ति के द्वारा दाहम, वाहम नहीं करना चाहिये। इस लिये एकान्तवास ग्रहण करके इसीर मित्रों के साथ रहो और सुरक्षित रीति से रहो और तुम्हारे मन्तव्यों का प्रचार तुम्हारे शिष्य कर सकते हैं" ॥

परन्तु संघटन के वृद्ध भाई विचार कर रहे थे कि यदि ईसा, सायङ्काल के सूर्य्य की भान्ति छिपकर फिर प्रकट न हो तो इससे सर्वसाधारण में बड़ी उत्तेजना फैलेगी ॥

परन्तु ईसा शङ्कित हुआ कि कहीं जोज़ेफ़ के शब्द सत्य न सिद्ध हों और वह उस रक्त प्रवाह का उत्तरदाता न ठहरे, जो उस के लिये और उस के नाम से किया जावे। अथवा क्रान्ति नाश का हेतु न बने। इस लिये उसने यही सम्मति स्थिर की कि वह सम्मति एकान्त वास करे। उस का शरीर अतिनिर्बल है। और जोज़ेफ़ और निकोडेमस के साथ वह वेथेनिया चला गया। मार्ग में वे सब संघटन के गुप्त रहस्यों के सम्बन्ध में वार्तालाप करते जाते थे। ईसा ने चाहा कि वेथेनिया में अपने मित्रों से स्वीकारी लेकर मृतसागर के निकटस्थ एकान्त देश में प्रस्थान करें। वेथे-निया में उसने अपनी माता को सान्त्वना दी और लाज़रस के अन्य मित्रों को शान्त करते हुये उसने उन्हें समझाया कि अपने मन्तव्यानुसार वह सदैव उनके साथ था और रहा भी उन के साथ॥

यह वात ईसा ने जेरोसलीम के समीप ही कही है उस के समस्त अनुयायियों पर प्रकट हो गई और उनमें से एकत्र होकर आये परन्तु उन्हें निर्दिष्ट-स्थान पर निर्दिष्ट समय पर उपस्थित होने की वात वतलाकर लौटा दिया गया। ईसा वहां गया। वहां कई सौ मनुष्य एकत्रित थे और उन्होंने अपना विश्वास प्रकट किया था कि ईसा एक सांसारिक राज्य की स्थापना करेगा और अपनी प्रजा के देश को रोमनों से मुक्त करावेगा। ईसा ने उन्हें शिक्षा दी और समझाया कि यह न होगा। ईसा ने इस लिये भी पुनः एकान्तवास करना उचित समझा कि जिस से सवसाधारण के हृदय से यह विश्वास हट जावे कि उसका राज्य सांसा-

रिक था। 'और वे उसके शब्दों और मन्तव्यों को ईश्वर वाक्य समझ कर माने और विश्वास करें। वह दिन, जब ईसा जेरोसलीम गया और उसके विश्वास पात्र शिष्य उसके साथ गये थे, बीत गया। और नगर की उच्च-राजसभा ने भी बहुत से गुप्तचरों को मिथ्या जनप्रवाद फैलाने और ईसा बन्दी करने के लिये भेज दिया था—परन्तु ईसा सन्हेन और इसीर भ्राताओं द्वारा रक्षित था। वह अब निर्बल भी था और उदास भी। उसके आघातों में पुनः पीड़ा होने लगी और उसका मुंह पीला पड़ गया था॥

जब ईसा ने पीटर और जान के साथ नगर में प्रवेश किया उसके मित्र उसे एक एकान्त गृह में ले गये। यहां उसने इसीर श्रेणी के वृद्धों को अपने पास बुलाया और उन से कहा कि विश्राम का समय समीप आचुका है अतः वे उसकी प्रतीक्षा "ओलाइव" पर्वत पर करें और वहां से उसे एकान्तवास गृह में ले चलें। यहां उसने अपने समस्त शिष्यों को एकत्र किया और नगर में होकर, नगर द्वार से बाहर "जोसफट" की घाटी की ओर गया। उसका आत्मा अत्यन्त विचलित और हृदय उदासी से पूर्ण था क्योंकि उसे यह ज्ञात था कि उसकी यह अन्तिम यात्रा है। "केड्रौन" पहुँच कर वह एक क्षण के लिये ठहरा और जेरोसलीम का स्मरण करके रोया। वहां से वह मौन साधे हुये आगे गया उसके शिष्य उसके अनुगामी थे। ईसा ने उन्हें वह स्थान दिखलाया जो उसे अत्यन्त प्रिय था। वह स्थान 'ओलविट' पर्वत शिखर के समीप है जहां से समस्त 'पैलस्टीन' देश देखा जासकता है। ईसा को इस स्थान का अन्त में एक बार

देख लेना रुचिकर था जहां से वह समस्त उपदेश को देख लेवे जहां उसने आयुभर रहकर काम किया था। वहां से पूर्व की ओर जौर्डन, मृतसागर और अरब देशस्थ पर्वत माला दिखाई देती थी और पश्चिम की ओर चट्टानी मन्दिर (Tample Rock) की अग्निज्वाला दीप्तिमान थी। पर्वत की शेष दिशाओं में विथेनिया नगर फैला हुआ था। कुछेक शिष्यों को विश्वास था कि ईसा उनके साथ विथेनिया जायगा परन्तु संघटन के वृद्धगण चुपचाप पर्वत की दूसरी ओर एकत्र थे और जैसा निश्चित हो चुका था तदनुकूल ईसा के साथ यात्रा करने के लिये सन्नद्ध थे॥

ईसा ने उत्सुकता से अपने शिष्यों को अनुशासन किया कि प्रसन्न चित्त और दृढ़ विश्वासी रहें। इन बातों के कहते हुये उसका स्वर उदासी से धीमा हो गया था और उसका मस्तिष्क पुण्य पलेकि यात्रा में निमग्न था। उसने मित्रों के लिये प्रार्थना की उसकी यात्रा का समय निकट था अतः हाथ उठाकर उसने उन्हें आशीर्वाद दिया। कुहरा पर्वत के चारो ओर उठरहा था और उस में उदय होते हुये सूर्य्य की किरणों से ललिमा आगई थी। इसीर संघटन के वृद्धों ने ईसा के पास, सन्देश भेजा कि वे प्रतीक्षा कर रहे हैं और समय भी अधिक होता जाता है। ज्यों ही कि शिष्यवर्ग साष्टाङ्गदण्डवत के लिये पृथ्वी पर गिरे उन के मुंह नियमानुसार भूमि की ओर थे ईसा उठा और शीघ्रता से घने कुहरे में होकर चला गया। जब शिष्यवर्ग भूमि से उठे उन्होंने अपने सम्मुख हमारे संघटन के दो श्वेत वस्त्रधारी भाइयों को खड़ा देखा। इन भाइयों ने उन्हें समझाया कि अब ईसा

की प्रतीक्षा न करो क्योंकि वह चला गया है। यह सुन कर शिष्यवर्ग शीघ्रता से पहाड़ की तली की ओर चल दिये। परन्तु ईसा के अप्रकट होने से शिष्यों के हृदय नई आशाओं और श्रद्धा से भर गये क्योंकि उन्हें अब यह ज्ञात हो गया था कि ईसा की शिक्षाओं के प्रचार का भार अब उन्हीं पर है क्योंकि उनका प्रिय गुरू अब फिर नहीं लौटेगा। अतः विश्वासपात्रता के साथ वे सब एकत्र होकर प्रतिदिन मन्दिर और उन स्थानों में जाने लगे जहां २ ईसा शिक्षा दिया करता था। अब शत्रुगण उन्हें पीडित करने अथवा उनके कार्य्य में बाधक होने का साहस नहीं कर सके—परन्तु नगर में एक जनप्रवाद फैला कि ईसा बादलों में होकर आसमान पर चला गया। यह किंवदन्ति उन लोगों की गाढ़ी हुई थी जो ईसा के प्रस्थान के समय उपस्थित नहीं थे। उसके शिष्यों ने इस मिथ्या जनप्रवाद का प्रतिवाद इसके लिये नहीं किया कि वे समझते थे कि इस किंवदन्ति से उनके सिद्धान्त पुष्ट और सर्वसाधारण प्रभावित हो रहे हैं जिन्हें उस में विश्वास करने के लिये किसी चमत्कार की इच्छा थी॥

जान, जो उस समय उपस्थित था, सब कुछ जानता था परन्तु उसने इस किंवदन्ति के सम्बन्ध में एक शब्द भी न कहा न लिखा। यही अवस्था मैथ्यू (Mattheus) की थी। शेष और जो थे उन्होंने उन किंवदन्तियों को उदाहरण रूप में एकत्र किया। और परस्पर उन पर इस प्रकार विश्वास किया मानो, ईसा के गुण गानार्थ उन्हें देव वाणी हुई थी। इस प्रकार उन में से एक ने जिसका नाम मरकस (Marcus) था रोम के एक समुदाय को यह वृत्तान्त लिखा

परन्तु वह घटनास्थल पर उपस्थित नहीं था उसकी इस वृत्तान्त के जानकारी का साधन, केवल जन प्रवाद था जो सवसाधारण में फैल रहा था। यही अवस्था लूकस (Lucas) की है उसने भी (मरकस की भांति) यही सब करने का यत्न किया ॥

परन्तु शिष्यों को इसीर भाइयों ने अनुमति दी थी कि * इसानों (Essenes) की पद्धति और आचार का ग्रहण करें जिस से एकमत्य बना रहे। अतः उन्होंने एक समाज की रचना की जिस में, यहां तक कि स्त्रियों ने भी अनधिकार चर्चाशील हो कर भाग लिया विशेष कर जेलीली से मैरी और उसके मित्रों ने ॥

उधर ईसा संघटन के वृद्धों, जोज़ेफ़ और निकोडेमस के साथ अपने मार्ग में था। रात्रि में साथियों ने एक भद्र पशु ईसा के लिये प्राप्त किया। क्योंकि वह बहुत दुर्बल हो गया था। अपने मित्रों के पार्थक्य से उस का चित्त बहुत व्याकुल हो गया था और उसने अनुभव किया कि उस की मृत्यु शीघ्र होनेवाली है ॥

जब, अपनी यात्रा की समाप्ति पर, मृतसागर के इसीर भ्राताओं के पास पहुंचे तो ईसा घोर कष्ट में था, और उसकी देख भाल चिकित्सक ही कर सकते थे, अतः जोज़ेफ़ और निकोडेमस उस के पास रहे और विस्मित संलाप में

---

* यहूदियों के एक पथ के सदस्य को 'इसीन' कहते हैं, जो अपने त्याग और दृढ़ता के लिये प्रसिद्ध थे।

उस की इच्छायें सुन कर, उन्होंने लौट जाने की आज्ञा उस से प्राप्त की और प्रतिज्ञा की कि जेरोसलीम के समाज सम्बन्धी विवर्ण की सूचना देते रहेंगे—परन्तु जेरोसलीम में सिवाय जान और मैथ्यू के, किसी को ज्ञात न था कि ईसा संघटन के एकान्तवास स्थान में है जिस से सवसाधारण उस के सांसारिक राजा होने की घोषणा न करें—परन्तु जोज़ेफ़ और निकोडेमस उस के पास तीन वार उसी जगह गये जहां वह अप्रकट रीति से रहता था। और अपने लौटने पर वे उस का सब विवर्ण हम को देते रहते थे॥

परन्तु ईसा का शरीर अब उन कष्टों के सहलेने के लिये पर्य्याप्त वलवान् नहीं रहा था जो विश्रामाभाव से उसे उठाने पड़े थे। उस का जी अपने शिष्यों का इच्छुक था और उसे उद्विग्नता थी कि किसी कर्तव्य में प्रमाद न किया जावे। उस के अशांत चित्त को एकान्तवास में भी शान्ति नही मिली चिन्ताओं से उस की शारीरिक और मांनिसिक शक्तियों का ह्रास हो गया था। और जोज़ेफ़ और निकोडेमस अंतिम वार उस के पास ही थे। छठी पूणमासी का चन्द्रमा उस समय प्रकाशित था। वे हमारे संघटन में आये हम उस समय प्रीतिभोज में भाग लेने की तय्यारी कर रहे थे। उन्होंने संघटन के वृद्धमहाशय पर गुप्त भेद प्रकट कर दिया। उन के हृदय दुख से अत्यन्त पीडित थे क्योंकि एक विशिष्ट-पुरुष हम से पिता के स्वर्ग में ले लिया गया। नित्यात्मा, प्राकृतिक शरीर से मुक्त हो कर शान्त हो गई। उस की मृत्यु उस का जीवन थी॥

चिकित्सक ने मृतसागर के निकट, ईसा के शव को, संघटन के नियमानुसार गाड़ दिया॥

निकोडेमस ने अपने मित्र के मृत्यु समाचार को सब पर अप्रकट ही रक्खा सिवाय उनके जो संघटन के उच्च-श्रेणी के सदस्य थे॥

प्रियभ्राताओ, हमारे मित्र की मृत्यु का सच्चा वृत्तान्त यह है जिसे ईश्वर ने बुद्धि और मनुष्यत्व की क्रियात्मक शिक्षा, अपने उत्कृष्ट कृत्यों के उदाहरण द्वारा, देने के लिये, भेजा था। उस समय से अब तक बहुत काल बीत चुका है और यहूदी लोग सात पासोवरों का भोज कर चुके हैं जब मैं यह पत्र तुम्हारी सूचना के लिये लिख रहा हूं। अब तुम, साम्प्रदायिक परम्परा में, जो सर्वसाधारण द्वारा बतलाई जाती है, देख सकते हो कि कितनी सच्चाई है॥

मैं यह जानता हूं कि उसके अनेक नव-शिष्य चमत्कारों की बात कहते हैं और वे स्वयं भी उनके होने के इच्छुक हैं। विचार शील पुरुष उनका प्रतिवाद इस लिये नहीं करते कि वे जानते हैं कि अभी सर्वसाधारण में इतनी बुद्धि नहीं है, कि बिन चमत्कारों की वृद्धि के सच्चाई को ग्रहण कर सकें। जैसा कि स्वयं तुमने ज्ञान किया है कि अनेक जनप्रवाद रोम से इधर उधर फैले हैं जिनका प्रतिवाद करना अनावश्यक है क्योंकि तुम स्वयं जानते हो कि हमारे संघटन के भाई का क्या कर्तव्य और क्या अकर्तव्य हैं। न केवल यहूदी, उस से सम्बन्धित अलौकिक कृत्यों का जिन में उन्हें विश्वास भी है बखान करते हैं किन्तु रोमन भी जो मूर्तिपूजक देवताओं में विश्वास रखते हैं और अब इन देवताओं से यहूदियों के वर्णित चमत्कार, सम्बन्धित किये जाते हैं॥

मैं तुम्हें अधिकार देता हूं कि अपने संघटन के वृद्धों को, जो तुम्हारे देश में हैं, इस की सूचना दे देवें, जो मैंने तुम्हें लिखा है परन्तु नवछात्रों अथवा अन्य श्रेणी के सदस्यों को नहीं देनी चाहिये। यह उस ईश्वर के पुत्र की ही महिमा है, जिसकी, हम सब पूजा करते हैं और जो अनेक उन पुरुषों से बढ़ कर है जो अपने सुकृत्यों से स्वर्ग को भेजे जाते हैं॥

जो कुछ ईसा ने अपने जीवन काल में शिक्षा दी थी, हमारा कर्तव्य है, कि उस का शुभ-सङ्कल्प से विस्तार करें क्योंकि उसने सूक्ष्म रीति से, मन्तव्यों को, प्रत्येक को बतलाया है। उसने गुप्त रहस्यों को उद्घाटन कर दिया है अतः मित्रता से उसका स्वागत करो जो उसके नाम से अपने को सम्बन्धित करता है। क्योंकि उसके शिष्य सब देशों में जावेंगे, और तुम उन को उनके प्रणाम विधि से, जान लोगे और वह वही है जो हमारे संघटन में प्रचलित है। तुम्हारा कर्तव्य है कि उन को सहायता दो जिस प्रकार जेरोसलीम के हमारे संघटन और सब देश ने उस स्वर्गीय पिता के पुत्र की सेवा की थी॥

बस यही वह सब कुछ है जो मुझे कहना था। और यह सब वैसा ही लिखा गया हैं, जैसा बीता है। क्योंकि हमारे संघटन के वृद्धों ने स्वयं इन घटनाओं को देखा है। और मैं ने भी अपनी आंखों से उन्हें देखा, अपने कानों से उन्हें सुना है। मैं जोज़फ़ का एक मित्र हूं जो उच्च-राजसभा का सदस्य है। वहां के भाइयों को अभिवादन करता हूं। शान्ति तुम्हारे साथ हो॥

ईसा के मृत्युदण्ड का आज्ञापत्र

पौन्टियस पिलेट अधिशर गवर्नर "लोअर जैलीली" ने नेज़रथ निवासी ईसा को दण्डाज्ञा दी कि सूलीद्वारा मृत्यु दण्ड भोगे।

सम्राट टिबिरियस सीजर के १७ वें राज्यावर्ष में २७ वीं मार्च को जेरोसलीम के पवित्र नगर में, ऐनस और कैयाफस यहूदी पुजारी और ईश्वरीय पूजार्थ बलिदान कर्ता तथा पौन्टियस पिलेट गवर्नर लोअर जैलीली, का जिसने प्रेटोरी (प्राचीन रोमन न्याय-सभा) में सभापति का आसन ग्रहण किया था, नेज़रथ निवासी ईसा को दण्डाज्ञा देते हैं कि दो चोरों के मध्य स्थानी सूली द्वारा मृत्युदण्ड पावे।

साक्षियों से प्रमाणित है कि :—

(१) ईसा सतपथ से लोगों को हटाता है।

(२) वह राज विद्रोही है।

(३) वह आईन का विरोधी है।

(४) वह मिथ्या रीति से अपने को ईश्वर पुत्र कहता है।

(५) वह (यहूदी) मन्दिर में घुसा—उस के पीछे एक समुदाय हाथों में खजूर की डालियां लिये हुए था।

प्रथम "शतानाधीश" क्यूलियस कार्निलियस उस को सूली गृह तक ले जावे।

प्रत्येक पुरुष को, चाहें सम्पन्न हो अथवा दरिद्र आज्ञा दी जाती है कि ईसा के मृत्युदण्ड का विरोध न करें।

साक्षी जिन्हों ने ईसा के मृत्यु दण्डार्थ हस्ताक्षर किये, ये हैं:—

(१) डैनियाल रोबानी (फ़रीसी)। (२) जोननस रोबानी।
(३) रैफाइल रोबानी। (४) केप्ट (नगर निवासी)।

ईसा जेरोसलीम नगर से 'स्ट्रूनस' द्वार बाहर जावेगा।